WISDOM IAS

साप्ताहिक

समसामयिक

24 फरवरी - 1 मार्च, 2025

UPSC, PCS और अन्य परीक्षाओं के लिए | प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

NAKSHA योजना: शहरी भूमि रिकॉर्ड सुधार

- रत्नागिरी के बौद्ध अवशेष: सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व
- नियमन-मुक्ति आयोग: आर्थिक सुधारों में राज्य की भूमिका
- कचरे का स्रोत-स्तरीय वर्गीकरण: चुनौतियाँ और समाधान
- 'लुक ईस्ट' से 'एक्ट ईस्ट': भारत की रणनीतिक दिशा
- उत्तराखंड में विनाशकारी हिमस्खलन
- भारत में इंटरनेट बंदी: कानूनी ढांचा और प्रभाव

© 2025 WISDOMIAS All Rights Reserved

www.wisdomias.co.in

Mob No. +91- 99967-72725, +91-78791-05480

Wisdom IAS, Rakesh Marg, Ghaziabad, UP

उत्तराखंड में विनाशकारी हिमस्खलन

समाचार: उत्तराखंड के **माणा गांव** में बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन (BRO) की एक परियोजना स्थल पर एक **विशाल ग्लेशियर हिमस्खलन आया**, जिसमें 22 मजदूर बर्फ के नीचे दब गए। भारतीय सेना और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) के नेतृत्व में बचाव अभियान जारी है, लेकिन लगातार हो रही **भारी बर्फबारी** के कारण राहत कार्य में कठिनाइयां आ रही हैं।

हिमस्खलन क्या होता है?

हिमस्खलन एक **तीव्र गति से नीचे की ओर गिरने वाली बर्फ, बर्फ के टुकड़ों, चट्टानों, मिट्टी और वनस्पति का प्रवाह** होता है। यह तब होता है जब किसी ढलान पर **जमी हुई बर्फ अस्थिर हो जाती** है और गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से तेजी से नीचे गिरने लगती है, जिससे यह रास्ते में आने वाली अन्य सामग्री को भी साथ ले जाती है।

हिमस्खलन के प्रकार:

- **स्लैब हिमस्खलन**
  - तब होता है जब बर्फ की किसी **गहरी कमजोर परत के टूटने से** ऊपरी कठोर बर्फ की परत एकसाथ खिसककर नीचे गिरती है।
  - यह **सबसे खतरनाक प्रकार** का हिमस्खलन होता है, जिसकी गति 130 किमी/घंटा तक पहुंच सकती है।
  - यह **स्कीयर, स्नोबोर्डर, पर्वतारोही और ट्रेकर्स** के लिए सबसे बड़ा खतरा होता है।
- **ढीली बर्फ का हिमस्खलन**
  - इसे स्लफ्स भी कहा जाता है, यह तब होता है जब सतह की **ताजा बर्फ कमजोर होकर** अपने ही भार से नीचे खिसकने लगती है।
  - आमतौर पर यह **खड़ी ढलानों पर भारी बर्फबारी** के तुरंत बाद होता है।
  - यह स्लैब हिमस्खलन की तुलना में **कम खतरनाक होता** है, लेकिन दुर्गम इलाकों में जोखिम भरा हो सकता है।
- **पाउडर हिमस्खलन**
  - यह **ढीली बर्फ और स्लैब हिमस्खलन** का मिश्रण होता है।
  - इसमें निचली परत घनी बर्फ और बर्फ के टुकड़ों से बनी होती है, जबकि ऊपरी परत बर्फ के महीन कणों की तेज़ रफ्तार धुंध होती है।
  - यह **190 मील प्रति घंटे से अधिक** की गति से बढ़ सकता है और लंबी दूरी तक फैल सकता है, जिससे यह अत्यधिक विनाशकारी हो जाता है।

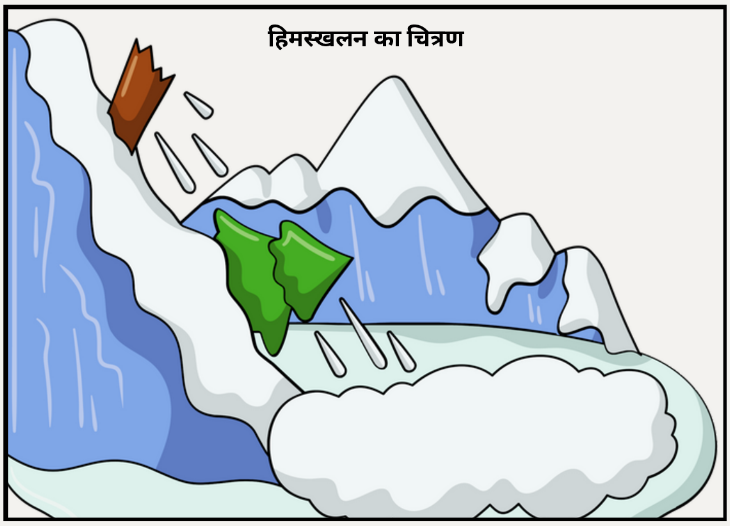

भारत में हिमस्खलन

भारत का हिमालयी क्षेत्र, विशेष रूप से **जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश** और **उत्तराखंड**, भारी बर्फबारी, खड़ी ढलानों और तेज़ तापमान बदलाव के कारण हिमस्खलन की दृष्टि से **अत्यधिक संवेदनशील** है। इसके अलावा, पूर्वी हिमालय (अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम) में भी कभी-कभी हिमस्खलन देखने को मिलता है।

हिमस्खलन के कारण

- **भारी बर्फबारी** – अस्थिर बर्फ की परतों पर भार बढ़ जाता है।
- **तापमान में बदलाव** – अचानक गर्मी बढ़ने से बर्फ की परतें कमजोर हो जाती हैं।
- **भूकंपीय गतिविधि और कंपन** – भूकंप या मानवीय गतिविधियां (जैसे विस्फोट) हिमस्खलन को ट्रिगर कर सकती हैं।
- **खड़ी ढलानें और ढीली बर्फ** – हिमालयी क्षेत्र में आम, जिससे हिमस्खलन की घटनाएं बढ़ती हैं।

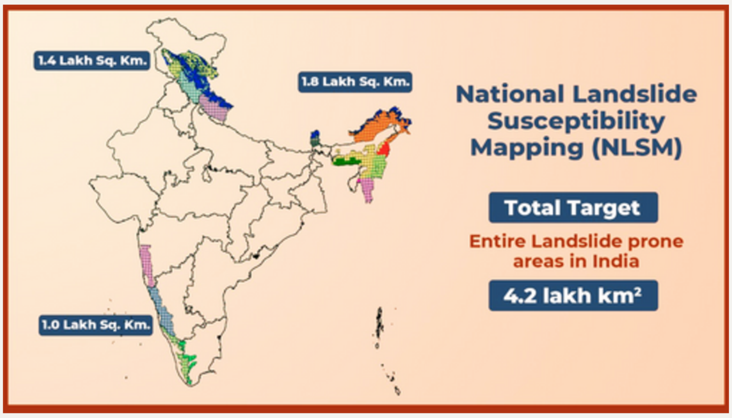

हिमस्खलन का प्रभाव

मानव हानि – हिमस्खलन के दौरान सबसे अधिक जोखिम सेना के जवानों, ट्रेकर्स और स्थानीय ग्रामीणों को होता है।

बुनियादी ढांचे को नुकसान – सड़कें, पुल, और सैन्य चौकियां बार-बार बाधित होती हैं, जिससे परिवहन और संचार प्रभावित होता है।

महत्वपूर्ण घटनाएं

- **2016 सियाचिन हिमस्खलन** – इस घटना में भारतीय सेना के 10 जवान शहीद हो गए थे।
- **2020 उत्तराखंड हिमस्खलन** – एक सैन्य चौकी पर हिमस्खलन गिरने से कई सैनिक हताहत हुए।
- **2021 चमोली आपदा** – इस आपदा में हिमस्खलन सहित अन्य भौगोलिक कारणों से भारी तबाही हुई।

रोकथाम और प्रतिक्रिया

- **पूर्वानुमान प्रणाली** – रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) के तहत काम करने वाला हिम और हिमस्खलन अध्ययन प्रतिष्ठान (SASE) उपग्रह डेटा और मौसम सेंसर की सहायता से हिमस्खलन के खतरे की निगरानी करता है।
- **संरक्षण उपाय** – हिम अवरोधक, नियंत्रित विस्फोट, और सुदृढ़ संरचनाएं बड़े पैमाने पर हिमस्खलन को रोकने में सहायक होती हैं।
- **बचाव अभियान** – भारतीय सेना, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) और बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइज़ेशन (BRO) की विशेष बचाव टीमें हेलीकॉप्टर, ड्रोन और हिमस्खलन ट्रांसीवर जैसे उपकरणों से लैस होती हैं।
- **जन जागरूकता** – ट्रेकर्स, पर्वतारोहियों और स्थानीय समुदायों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और परामर्श जारी किए जाते हैं, जिससे वे हिमस्खलन के खतरे को बेहतर तरीके से समझ सकें।

बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइज़ेशन (BRO)

बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइज़ेशन (BRO) **रक्षा मंत्रालय** के तहत एक वैधानिक निकाय है, जो भारत की सीमावर्ती सड़कों और मित्र देशों में सड़क नेटवर्क के विकास और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है।

इसमें भारतीय सेना के विभिन्न विभागों के कर्मी शामिल होते हैं, जैसे –

- इंजीनियर्स कोर
- इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल इंजीनियर्स
- आर्मी सर्विस कोर
- मिलिट्री पुलिस

इसके अलावा, इसमें जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स (GREF) के सदस्य भी कार्यरत होते हैं।

IBEX ब्रिगेड: बचाव अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका

- **IBEX ब्रिगेड** भारतीय सेना की एक **विशेष उच्च ऊंचाई वाली इकाई है**, जो पर्वतीय युद्ध और बचाव अभियानों में विशेषज्ञता रखती है।
- हाल ही में, IBEX ब्रिगेड ने उत्तराखंड के चमोली जिले के माणा गांव में ग्लेशियर हिमस्खलन के बाद बचाव अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

- हिमस्खलन भारत के **हिमालयी क्षेत्र में एक गंभीर प्राकृतिक** आपदा बनी हुई है, जो विशेष रूप से सैन्य अभियानों, बुनियादी ढांचे और स्थानीय आबादी को प्रभावित करती है। हालांकि, **वैज्ञानिक प्रगति, पूर्व चेतावनी प्रणाली और उन्नत बचाव क्षमताओं** ने भारत की हिमस्खलन से निपटने की क्षमता में काफी सुधार किया है।
- बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइज़ेशन (BRO), हिम और हिमस्खलन अध्ययन प्रतिष्ठान (SASE) और भारतीय सेना जैसी संस्थाओं के **निरंतर प्रयास उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में** बेहतर तैयारी और सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं।

रत्नागिरी के अवशेष: बौद्ध विरासत का खजाना

प्रसंग: दिसंबर 2023 में, पुरातत्वविदों ने **ओडिशा के रत्नागिरि में 1.4 मीटर लंबी बुद्ध की सिर की मूर्ति,** 1,500 वर्ष पुराने **शिलालेख** और स्तूपों की खोज की। यह खोज रत्नागिरि के **वज्रयान बौद्ध धर्म** के एक प्रमुख केंद्र के रूप में महत्व को पुनः स्थापित करती है, जो 6वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी के बीच फला-फूला। यह उत्खनन रत्नागिरि की कलात्मक, आध्यात्मिक और शैक्षणिक योगदानों को बौद्ध जगत के लिए उजागर करता है।

रत्नागिरि का ऐतिहासिक महत्व

रत्नागिरि, जिसका अर्थ है **'रत्नों की पहाड़ी'**, 6वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान गुप्त और उत्तर-गुप्त शासकों के अधीन समृद्ध हुआ। यह ओडिशा के **'डायमंड ट्रायंगल'** के बौद्ध स्थलों का हिस्सा था, जिसमें ललितगिरि और उदयगिरि भी शामिल थे।

- शिलालेख, बोधिसत्व छवियां और स्तूप दर्शाते हैं कि रत्नागिरि **वज्रयान बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र** था।
- इस स्थल ने **भारत और दक्षिण पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म** के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **नालंदा और विक्रमशिला** जैसे प्रसिद्ध बौद्ध संस्थानों से इसके संबंध इसकी बौद्ध विद्वत्ता पर प्रभाव को इंगित करते हैं।

रत्नागिरी में प्राप्त अवशेष और कलाकृतियां

1. पवित्र स्तूप और अवशेष कास्केट

- उत्खनन में मिले अवशेष कास्केट (हड्डियों के टुकड़े, मनके और शिलालेख युक्त पात्र) इन स्तूपों के धार्मिक महत्व को दर्शाते हैं।

2. मठ (विहार) और आवासीय परिसर

- रत्नागिरी में दो अच्छी तरह संरक्षित मठ मिले हैं, जो बौद्ध शिक्षा केंद्रों के रूप में कार्यरत थे।
- बड़े मठ में एक भव्य प्रवेश द्वार, विशाल आंगन और कई भिक्षु कक्ष हैं।
- दीवारों पर तारा, अवलोकितेश्वर और मंजुश्री की नक्काशी की गई है।

3. उत्कृष्ट बौद्ध मूर्तियां

- **भूमिस्पर्श मुद्रा** (धरती को स्पर्श करने की मुद्रा) में बैठे बुद्ध, जो ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक है।
- **ध्यानि बुद्ध**, जो विभिन्न बौद्ध दर्शनों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **बोधिसत्व मूर्तियां**, जिनमें अवलोकितेश्वर और मैत्रेय प्रमुख हैं।
- **तारा जैसी महिला देवियां**, जो तांत्रिक बौद्ध प्रभाव को दर्शाती हैं।

4. शिलालेख और ताम्रपत्र

- **ब्राह्मी और संस्कृत शिलालेख बौद्ध** शासकों के संरक्षण और मठीय गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हैं।
- कुछ शिलालेख **नालंदा और विक्रमशिला** जैसे दूरस्थ बौद्ध केंद्रों से संबंध दर्शाते हैं।

5. टेराकोटा मुद्राएं और पांडुलिपियां

- खुदाई में **'श्री रत्नागिरि महाविहार्य आर्य भिक्षु संघस्य'** अंकित टेराकोटा मुद्राएं मिलीं, जो इसे एक बौद्ध विश्वविद्यालय के रूप में पुष्टि करती हैं।
- **प्राप्त पांडुलिपियों के टुकड़े** बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन और शिक्षा को दर्शाते हैं।

वज्रयान बौद्ध धर्म में रत्नागिरी की भूमिका

- रत्नागिरी में विभिन्न **वज्रयान देवता और गूढ़ प्रतीक** पाए गए हैं, जो इसे तांत्रिक बौद्ध साधना का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाते हैं।
- यह स्थान भारत और अन्य देशों के **भिक्षुओं, विद्वानों और साधकों** को आकर्षित करता था, जिससे वज्रयान बौद्ध धर्म का प्रसार संभव हुआ।

हीनयान और महायान बौद्ध धर्म की समझ

- बौद्ध धर्म को **चौथी बौद्ध परिषद (72 ईस्वी) के दौरान**, जो कश्मीर में **कुषाण सम्राट कनिष्क** के शासनकाल में आयोजित हुई थी, हीनयान और महायान दो शाखाओं में विभाजित किया गया।
- **हीनयान बौद्ध धर्म (थेरवाद बौद्ध धर्म)**
  - **व्यक्तिगत ज्ञान** (अर्हत आदर्श) प्राप्ति पर जोर देता है।
  - **बुद्ध के मूल शिक्षाओं** का कठोर अनुशासन के साथ पालन करता है।
  - **मुख्य रूप से मठवासी अनुशासन** और प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथों (पाली कैनन या त्रिपिटक) पर केंद्रित है।
  - बुद्ध को एक **ऐतिहासिक शिक्षक** के रूप में देखा जाता है।

  - मुख्य रूप से श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, लाओस और कंबोडिया में प्रचलित है।

महायान बौद्ध धर्म (महान वाहन)

- **सर्वजन ज्ञान प्राप्ति** (बोधिसत्व आदर्श) पर केंद्रित, जो सभी प्राणियों के प्रति करुणा (Karuna) को प्रोत्साहित करता है।
- **अतिरिक्त ग्रंथों जैसे सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र** (लोटस सूत्र) और प्रज्ञापारमिता सूत्र को शामिल करता है।
- **बुद्ध को एक दिव्य व्यक्ति** के रूप में देखा जाता है, जिसमें कई बुद्धों की अवधारणा शामिल है।
- **चीन, कोरिया, जापान**, तिब्बत और वियतनाम तक फैला, जिससे जेन, प्योर लैंड और वज्रयान जैसी बौद्ध शाखाओं पर प्रभाव पड़ा।

निष्कर्ष

- रत्नागिरी में हुई खोज इसकी ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्ता को एक प्रमुख **वज्रयान बौद्ध केंद्र** के रूप में पुनः स्थापित करती है।
- इस स्थल की समृद्ध विरासत, **उत्कृष्ट मूर्तिकला और मठीय परंपरा** इसे बौद्ध शिक्षा, कला और एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाती है।
- जैसे-जैसे खुदाई आगे बढ़ रही है, रत्नागिरी भारत के बौद्ध अतीत से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कड़ी बना रहेगा।

भारत के लड़ाकू विमान विकल्प

संदर्भ: एयरो इंडिया 2025 में **रूसी Su-57** और अमेरिकी **F-35** ने ध्यान आकर्षित किया, जहां Su-57 ने अपनी **उन्नत गतिशीलता का प्रदर्शन किया**। चीन और पाकिस्तान से सुरक्षा चुनौतियों के चलते भारत के लड़ाकू विमान बेड़े का आधुनिकीकरण अब प्राथमिकता बन गया है।

भारत की लड़ाकू विमान स्थिति

- भारतीय वायुसेना (IAF) को **42.5 लड़ाकू स्क्वाड्रनों की आवश्यकता** है, लेकिन वर्तमान में केवल 31 स्क्वाड्रन संचालित कर रही है, जिनमें से कई विमान पुराने हो चुके हैं।
- **चीन, रूस और अमेरिका पहले ही पांचवीं पीढ़ी** के लड़ाकू विमानों का संचालन कर रहे हैं, जबकि चीन छठी पीढ़ी के विमानों के विकास की ओर बढ़ रहा है।
- **पाकिस्तान चीन से J-35 जेट खरीदने** की तैयारी में है, जिससे क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और बढ़ रही है।

प्रमुख साझेदारियाँ और लड़ाकू विमान विकल्प

- **अमेरिकी F-35:** उन्नत स्टेल्थ लड़ाकू विमान, जिसकी कीमत **प्रति यूनिट $100 मिलियन है**, जबकि संपूर्ण जीवनकाल में इसका रखरखाव $2 ट्रिलियन से अधिक होगा। अमेरिका ने भारत को संभावित बिक्री के संकेत दिए हैं।
- **रूसी Su-57:** भारत और रूस के बीच संयुक्त परियोजना (FGFA) के रूप में शुरू हुआ, लेकिन उच्च लागत और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संबंधी चिंताओं के कारण भारत ने इससे हटने का फैसला किया।
- **स्वीडन का Saab Gripen:** MRFA कार्यक्रम के तहत 114 मल्टी-रोल लड़ाकू विमानों की आपूर्ति के लिए प्रतिस्पर्धा में है।

भारत की नई रणनीति: स्वदेशी विकास

भारत अब रूसी निर्भरता से स्वदेशी लड़ाकू बेड़े की ओर बढ़ रहा है।

- **हल्के लड़ाकू विमान (LCA)** वेरिएंट और उन्नत मध्यम लड़ाकू विमान (AMCA) परियोजना पर फोकस कर रहा है।
- **भविष्य का लड़ाकू बेड़ा** (2040 तक):
  - 220 LCA-Mk1
  - 120 LCA-Mk2
  - प्रारंभिक AMCA बैच
- **AMCA प्रोटोटाइप** 2026-2027 तक तैयार होने की उम्मीद, जबकि 2034 तक इसका संचालन शुरू हो सकता है।

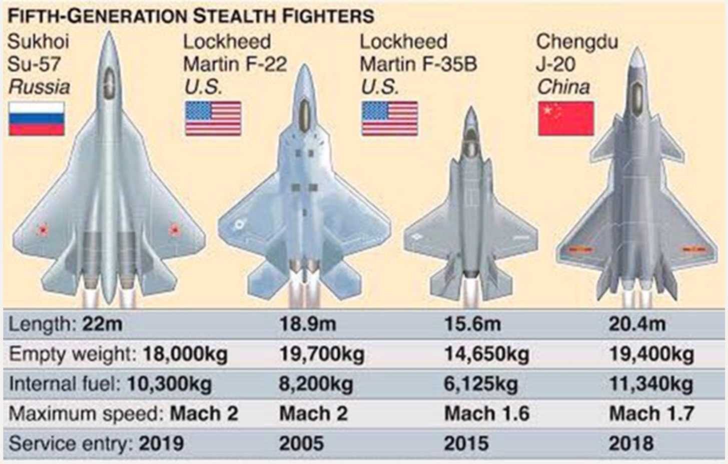

- **LCA-Mk1A** की डिलीवरी में देरी, जबकि LCA-Mk2 के 2026 तक उड़ान भरने की उम्मीद

चुनौतियाँ और रणनीतिक विचार
- **विदेशी इंजनों (अमेरिकी और फ्रांसीसी)** पर निर्भरता आत्मनिर्भरता को प्रभावित करती है।
- **यदि भारत अपने मौजूदा बेड़े में F-35** को शामिल करता है, तो संचालनगत लचीलापन (Operational Flexibility) एक चिंता का विषय हो सकता है।
- **अमेरिका और रूस के साथ संतुलन बनाए** रखते हुए रणनीतिक स्वायत्तता बरकरार रखना जटिल चुनौती है।

निष्कर्ष और आगे की राह
- भारत के **लड़ाकू विमान आधुनिकीकरण** की प्रक्रिया राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है।
- **एक संतुलित दृष्टिकोण**—उन्नत विमानों का अधिग्रहण और स्वदेशी उत्पादन को मजबूत करना—भविष्य की चुनौतियों के लिए एक सशक्त वायु सेना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

नियमन-मुक्ति आयोग और शासन में राज्य की विकसित होती भूमिका

प्रसंग: भारत के प्रधान मंत्री ने **नियमन-मुक्ति आयोग** (Deregulation Commission) की स्थापना की घोषणा की है, जिसका **उद्देश्य निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाना** और पुरानी एवं जटिल प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाना है, जिससे **व्यापार सुगमता** (Ease of Doing Business) को बढ़ावा मिले।

नियमन-मुक्ति और भारत में इसकी आवश्यकता
नियमन-मुक्ति (Deregulation) का अर्थ है **सरकार द्वारा लगाए गए अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाना**, जिससे प्रतिस्पर्धा, दक्षता और उद्यमिता को प्रोत्साहन मिले। भारत में अत्यधिक लाइसेंसिंग, **नौकरशाही जटिलताएँ** और क्षेत्रीय प्रतिबंध व्यापारिक विकास, विशेष रूप से स्टार्टअप और MSMEs के विस्तार में बाधा बनते हैं।

नियमन-मुक्ति आयोग के प्रमुख बिंदु
- **उद्देश्य:** अनावश्यक नियमों की पहचान कर उन्हें समाप्त करना, और RBI, SEBI, TRAI, CERC जैसे नियामक संस्थानों के साथ समन्वय बनाना।
- **मुख्य क्षेत्र:** बैंकिंग, ऊर्जा, दूरसंचार, खुदरा और विनिर्माण।
- **जन विश्वास 2.0 पहल:** पुराने अनुपालनों (compliances) को समाप्त करने और सरकारी हस्तक्षेप कम करने के व्यापक प्रयासों का हिस्सा।

भारत को नियमन-मुक्ति आयोग की क्यों आवश्यकता है?
- **नौकरशाही प्रक्रियाओं को सरल बनाना:** 2020 की Ease of Doing Business रैंकिंग में भारत 63वें स्थान पर था; प्रक्रियाओं को सरल बनाकर आर्थिक गतिविधियों में तेजी लाई जा सकती है।
- **आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देना:** विनिर्माण, अवसंरचना और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों को तेज मंजूरी और सरलीकृत अनुपालनों की आवश्यकता है।
- **स्टार्टअप और MSMEs को बढ़ावा देना:** अत्यधिक श्रम कानून, कराधान बोझ और कई अनुमतियों की आवश्यकता उद्यमिता के विकास में बाधा डालती है।
- **पुराने कानूनों की समीक्षा:** औपनिवेशिक युग के कई कानून अप्रासंगिक हो गए हैं और इन्हें समाप्त या अद्यतन करने की आवश्यकता है।
- **विदेशी निवेश (FDI) को आकर्षित करना:** खुदरा, बीमा और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में FDI बढ़ रहा है, लेकिन कई अनावश्यक प्रतिबंध अब भी मौजूद हैं।
- **संघीय व्यवस्था को सशक्त बनाना:** राज्यों में समान नीतियाँ लागू करने से व्यापारिक माहौल में असंगतियों को कम किया जा सकता है।

भारत में नियमन-मुक्ति का विकास
1991 की **आर्थिक उदारीकरण नीति** ने राज्य नियंत्रण को कम किया, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को प्रोत्साहित किया और निजी क्षेत्र की भागीदारी का विस्तार किया।

प्रमुख नियामक संस्थानों द्वारा क्षेत्रवार नियमन-मुक्ति

नियामक निकाय	क्षेत्र	मुख्य विनियमन-मुक्ति सुधार
RBI	बैंकिंग एवं वित्त	ब्याज दरों का विनियमन-मुक्ति, बीमा क्षेत्र में FDI बढ़ाया, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों पर नियंत्रण कम किया।
TRAI	दूरसंचार	निजी कंपनियों को प्रवेश (1994), राजस्व-साझाकरण प्रणाली (1999), और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा (जियो का आगमन - 2016)।
CERC	ऊर्जा	निजी निवेश को प्रोत्साहन, बिजली पारेषण में खुली पहुंच, नवीकरणीय ऊर्जा नीलामी की शुरुआत।
PNGRB	तेल एवं गैस	पेट्रोल (2010) और डीजल (2014) मूल्य निर्धारण को मुक्त किया, दैनिक ईंधन मूल्य संशोधन प्रणाली लागू (2016)।

विनियमन-मुक्ति की चुनौतियाँ और नकारात्मक प्रभाव
- **बाजार विफलताएँ:** अनियंत्रित विनियमन-मुक्ति से एकाधिकार और आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकते हैं (जैसे, 2008 का वित्तीय संकट)।
- **रोज़गार हानि:** सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (PSUs) के निजीकरण से छंटनी बढ़ी है।
- **नियामक कब्जा:** निजी कंपनियों का नीति निर्माण पर प्रभाव उपभोक्ता हितों को नुकसान पहुँचा सकता है (जैसे, जियो का दूरसंचार क्षेत्र में प्रभुत्व)।
- **ग्रामीण असमानता:** धन का संकेंद्रण शहरी क्षेत्रों को अधिक लाभ पहुँचाता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र पीछे छूट जाते हैं।
- **पर्यावरणीय चिंताएँ:** तीव्र औद्योगिक विकास से प्रदूषण और संसाधनों की अधिक खपत बढ़ती है।

आगे का रास्ता
- **उपभोक्ता संरक्षण सुनिश्चित करना:** नीतियाँ मुक्त बाज़ार और उपभोक्ता अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखें।
- **कॉरपोरेट कदाचार रोकना:** एकाधिकार और अनैतिक व्यावसायिक प्रथाओं को रोकने के लिए सख्त निगरानी आवश्यक है।
- **सार्वजनिक कल्याण और व्यापार हितों का संतुलन:** स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नियंत्रित विनियमन-मुक्ति आवश्यक है ताकि मुनाफाखोरी न हो।

निष्कर्ष
विनियमन-मुक्ति आयोग (Deregulation Commission) शासन को सरल बनाने, आर्थिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने और निवेश आकर्षित करने की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है। हालाँकि, **संतुलित विनियमन-मुक्ति** आवश्यक है ताकि सार्वजनिक हितों की रक्षा के साथ-साथ बाज़ार की दक्षता भी बनी रहे।

भारत में इंटरनेट बंदी: प्रवृत्तियाँ, कानूनी ढांचा और प्रभाव

समाचार: एडवोकेसी समूह 'एक्सेस नाउ' की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में भारत ने वैश्विक स्तर पर दूसरी सबसे अधिक इंटरनेट बंदी का सामना किया, जो विश्व की कुल बंदियों का 28% था।

इंटरनेट बंदी: वैश्विक और भारतीय प्रवृत्तियाँ

वैश्विक परिदृश्य:
2024 में विश्वभर में 296 इंटरनेट बंदी दर्ज की गईं, जिसमें म्यांमार पहले स्थान पर रहा और भारत दूसरे स्थान पर।

भारत के आँकड़े:
- **कुल बंदियाँ:** 84 मामले, जो पिछले वर्षों की तुलना में कम हैं।
- **प्रभावित क्षेत्र:** 16 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश।
- **सबसे अधिक बंदियाँ:** मणिपुर (21), हरियाणा (12), जम्मू और कश्मीर (12)।
- **मुख्य कारण:** 41 बंदियाँ विरोध प्रदर्शनों से जुड़ीं, 23 सांप्रदायिक हिंसा के कारण।

भारत में इंटरनेट बंदी को नियंत्रित करने वाले कानूनी प्रावधान
- **भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम:**
  - **"सार्वजनिक आपातकाल"** या "सार्वजनिक सुरक्षा" के मामलों में इंटरनेट बंदी की अनुमति देता है।
  - लेकिन, इन शर्तों की **स्पष्ट परिभाषा का अभाव** है।

- **पूर्व-2017 ढांचा:** इंटरनेट बंदी सीआरपीसी की धारा 144 के तहत लागू की जाती थी, जो अधिकारियों को अवैध जमावड़े रोकने और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने की शक्ति देती है।
- **2017 संशोधन:** दूरसंचार सेवाओं के अस्थायी निलंबन (सार्वजनिक आपातकाल या सार्वजनिक सुरक्षा) नियम लागू किए गए।
- अब सभी बंदी आदेशों की पांच दिनों के भीतर समीक्षा अनिवार्य है।
- **सुप्रीम कोर्ट का निर्णय (अनुराधा भसीन बनाम भारत संघ, 2020):** इंटरनेट तक पहुंच अनुच्छेद 19 के तहत एक मौलिक अधिकार है।
    - बंदियाँ अस्थायी और न्यायसंगत होनी चाहिए, अनिश्चितकालीन नहीं।
    - सरकार को सभी बंदी आदेश प्रकाशित करने होंगे।
    - न्यायिक समीक्षा अनिवार्य है।

इंटरनेट बंदी के समर्थन में तर्क:

- **राष्ट्रीय सुरक्षा** - गलत सूचना पर नियंत्रण और अवैध गतिविधियों की रोकथाम।
- **हिंसा की रोकथाम** - विरोध प्रदर्शनों और दंगों के ऑनलाइन समन्वय को बाधित करना।
- **फर्जी खबरों पर अंकुश** - संकट के दौरान गलत सूचनाओं के प्रसार को रोकना।

इंटरनेट बंदी के खिलाफ तर्क:

- **मौलिक अधिकारों का उल्लंघन** - अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचना तक पहुंच बाधित होती है।
- **आर्थिक नुकसान** - डिजिटल क्षेत्र सहित व्यवसाय प्रभावित होते हैं।
- **शिक्षा पर असर** - ऑनलाइन पढ़ाई करने वाले छात्रों को कठिनाई होती है।
- **वैश्विक छवि** - निवेशकों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की चिंता बढ़ती है।
- **पारदर्शिता की कमी** - अस्पष्ट और मनमानी बंदियाँ जनता के विश्वास को कमजोर करती हैं।

निष्कर्ष:

जबकि सुरक्षा चिंताओं के **मद्देनजर अस्थायी प्रतिबंध** उचित हो सकते हैं, अंधाधुंध इंटरनेट बंदियाँ भारी सामाजिक और आर्थिक नुकसान पहुंचाती हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा और लोकतांत्रिक **अधिकारों के संतुलन** के लिए अधिक पारदर्शी और जवाबदेह इंटरनेट शासन की आवश्यकता है।

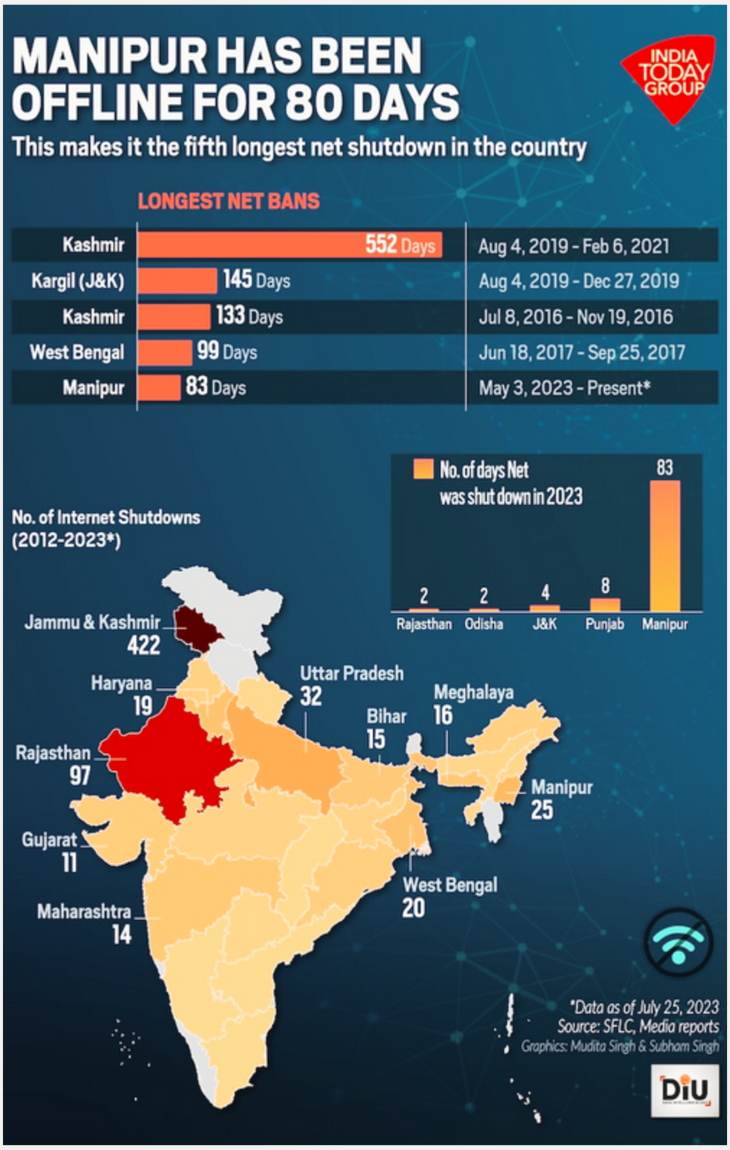

कचरे का स्रोत-स्तरीय वर्गीकरण: चुनौतियाँ और समाधान

प्रसंग: सुप्रीम कोर्ट ने पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए स्रोत पर कचरे के वर्गीकरण के महत्व पर जोर दिया है। अदालत ने कहा कि कचरे का **वर्गीकरण घरेलू स्तर से ही शुरू होना चाहिए** ताकि कचरा प्रबंधन की दक्षता बढ़े और पर्यावरणीय खतरों को कम किया जा सके।

कचरे के वर्गीकरण का महत्व

- **लैंडफिल का बोझ कम करना** – कचरे के वर्गीकरण से लैंडफिल पर निर्भरता घटती है, जिससे भूमि प्रदूषण और मीथेन उत्सर्जन कम होता है।
- **रीसाइक्लिंग को बढ़ावा** – जैविक कचरे का खाद में रूपांतरण किया जा सकता है, जबकि गैर-बायोडिग्रेडेबल सामग्री का पुनर्चक्रण किया जा सकता है, जिससे परिपत्र अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।
- **प्रदूषण की रोकथाम** – मिश्रित कचरे से विषाक्त तरल पदार्थ और हानिकारक उत्सर्जन उत्पन्न होते हैं, जो मिट्टी, वायु और जल को दूषित करते हैं। वर्गीकरण से सुरक्षित निपटान सुनिश्चित होता है।
- **अपशिष्ट-से-ऊर्जा दक्षता में सुधार** – उचित वर्गीकरण से कचरे से ऊर्जा उत्पन्न करने वाले संयंत्रों की कार्यक्षमता बढ़ती है, क्योंकि दूषित पदार्थ कम होते हैं।

कचरे के वर्गीकरण को लागू करने में चुनौतियाँ

- **जन जागरूकता की कमी** – कई परिवार अज्ञानता और व्यवहारगत प्रतिरोध के कारण कचरे का वर्गीकरण नहीं करते।
- **अपर्याप्त बुनियादी ढांचा** – संग्रहण और प्रसंस्करण सुविधाओं की कमी के कारण असंवर्गीकृत कचरे का डंपिंग होता है।
- **कमजोर प्रवर्तन** – ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के बावजूद, नगरपालिका स्तर पर इसका प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो रहा है।
- **कचरा प्रबंधन कर्मियों का प्रतिरोध** – अनौपचारिक कचरा बीनने वाले और सफाई कर्मचारी अलग-अलग कचरे के संग्रह के लिए प्रोत्साहन और प्रशिक्षण की कमी के कारण सहयोग नहीं करते।

सरकारी पहलें

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016

- स्रोत पर कचरे का वर्गीकरण अनिवार्य, जिसमें कचरे को जैविक, अजैविक और खतरनाक श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।
- खाद निर्माण, बायो-मीथनेशन और अपशिष्ट-से-ऊर्जा समाधानों को प्रोत्साहित किया जाता है।
- बड़े कचरा उत्पादकों (आवासीय सोसायटी, होटल) को अपने कचरे का प्रबंधन करने की जिम्मेदारी दी गई है।

स्वच्छ भारत मिशन (SBM)

- **SBM-शहरी** – 100% घर-घर कचरा संग्रह और वर्गीकरण को बढ़ावा देता है।
- **SBM-ग्रामीण** – गाँवों में खाद निर्माण और बायोगैस संयंत्रों को प्रोत्साहित करता है।
- **अपशिष्ट-से-ऊर्जा परियोजनाएँ** – पुनर्चक्रण न किए जा सकने वाले कचरे को बिजली में बदलने को बढ़ावा देता है।
- **विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR)** – निर्माताओं को उपभोक्ता के बाद उत्पन्न कचरे (प्लास्टिक कचरा, ई-कचरा) के प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपता है।

भारत में सफल कचरा प्रबंधन मॉडल

- **इंदौर –** भारत का सबसे स्वच्छ शहर, जिसने 100% स्रोत-स्तरीय कचरा वर्गीकरण और प्रभावी कचरा प्रसंस्करण हासिल किया है।
- **अंबिकापुर, छत्तीसगढ़ –** महिलाओं द्वारा संचालित स्व-सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से संचालित शून्य अपशिष्ट मॉडल।
- **पुणे की SWaCH पहल –** कचरा बीनने वालों को औपचारिक कचरा संग्रह प्रणाली में एकीकृत कर रोज़गार सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

आगे का मार्ग

- **कठोर प्रवर्तन –** अलगाव न करने पर दंड और अनुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन योजना।
- **बुनियादी ढांचे का विकास –** समुदाय स्तर पर विकेंद्रीकृत कचरा प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना।
- **प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान –** AI-आधारित छंटाई, RFID ट्रैकिंग, और स्मार्ट कचरा प्रबंधन प्रणाली का उपयोग।
- **कचरा बीनने वालों का एकीकरण** – अनौपचारिक कचरा प्रबंधकों को नगरपालिका तंत्र में शामिल कर बेहतर वर्गीकरण और रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देना।

स्रोत पर कचरे के वर्गीकरण को प्राथमिकता देकर, भारत एक स्वच्छ और सतत भविष्य की ओर बढ़ सकता है।

NAKSHA योजना: भारत में शहरी भूमि रिकॉर्ड को सुदृढ़ करना

प्रसंग: केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री ने हाल ही में शहरी भूमि रिकॉर्ड के आधुनिकीकरण और **छोटे शहरों में शासन** सुधारने के लिए NAKSHA योजना शुरू की।

योजना के बारे में

- **26 राज्यों के 152 शहरी स्थानीय** निकायों में पायलट परियोजना के रूप में शुरू की गई।
- **35 वर्ग किमी से छोटे क्षेत्र और 2 लाख** से कम जनसंख्या वाले शहरों को कवर करता है।
- **ग्रामीण विकास मंत्रालय** के भूमि संसाधन विभाग (DoLR) द्वारा क्रियान्वित।
- **पहले चरण में 4,142.63 वर्ग** किमी का मानचित्रण किया जाएगा, इसके बाद 4,912 शहरी स्थानीय निकायों तक विस्तार होगा।

NAKSHA योजना की प्रमुख विशेषताएँ

- डिजिटल इंडिया भूमि रिकॉर्ड आधुनिकीकरण कार्यक्रम (DILRMP) का हिस्सा।
- **हवाई फोटोग्राफी**, **फील्ड सर्वेक्षण** और **GIS तकनीक** के माध्यम से सटीक भौगोलिक शहरी भूमि रिकॉर्ड तैयार करना।
- 100% केंद्र द्वारा वित्त पोषित, पायलट परियोजना की लागत ₹194 करोड़।
- **विभिन्न संस्थानों के साथ साझेदारी:**
  - मध्य प्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक विकास निगम (MPSEDC) – वेब-GIS प्लेटफॉर्म।
  - **राष्ट्रीय सूचना विज्ञान** केंद्र सेवा निगम (NICSI) – डेटा संग्रहण।
  - भारतीय सर्वेक्षण विभाग (Survey of India) – हवाई सर्वेक्षण और ऑर्थोरेक्टिफाइड इमेजरी प्रदान करना।
- राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों की सरकारें **फील्ड सर्वेक्षण** और ग्राउंड-ट्रुथिंग करके अंतिम शहरी और अर्ध-शहरी भूमि रिकॉर्ड प्रकाशित करेंगी।

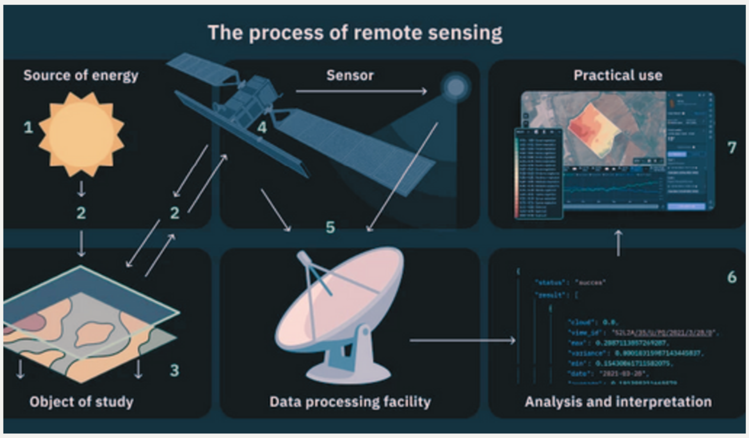

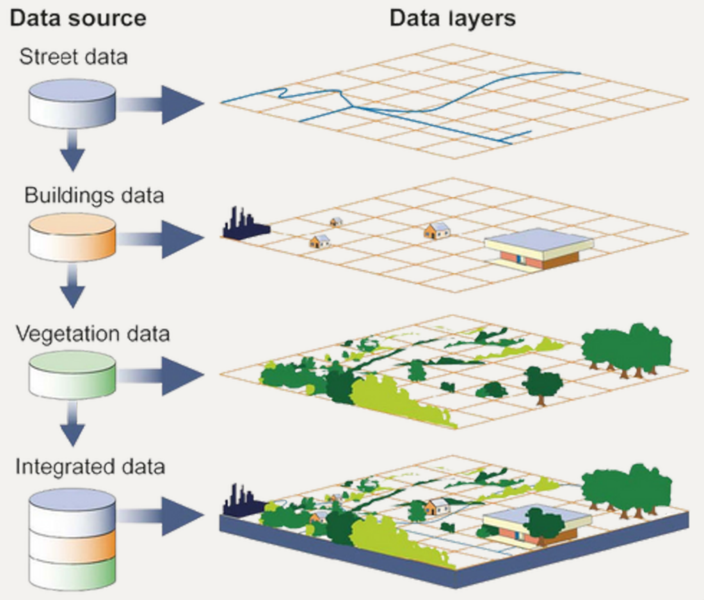

सर्वेक्षण और मानचित्रण प्रक्रिया

हवाई सर्वेक्षण

- **ड्रोन का उपयोग** किया जाता है, जो उच्च-रिज़ॉल्यूशन कैमरा और LiDAR सेंसर से लैस होते हैं
- **रिज़ॉल्यूशन पांच** सेंटीमीटर होता है जो उपग्रह चित्रों के तीस से पचास सेंटीमीटर की तुलना में अधिक सटीक है

तीन चरणीय सर्वेक्षण प्रक्रिया

1. **हवाई इमेजिंग**
   - ड्रोन द्वारा उच्च-रिज़ॉल्यूशन शहरी भूमि चित्र लिए जाते हैं
2. **फील्ड सत्यापन**
   - संपत्ति कर, स्वामित्व और पंजीकरण विवरण को भूमि से जोड़ा जाता है
   - टूडी और थ्रीडी मॉडल तैयार किए जाते हैं जो शहरी योजना में मदद करते हैं
   - प्रारंभिक भूमि रिकॉर्ड प्रकाशित किए जाते हैं
3. **शिकायत निवारण और अंतिम मानचित्रण**
   - जनता की आपत्तियों का समाधान किया जाता है
   - अंतिम शहरी भूमि रिकॉर्ड प्रकाशित किए जाते हैं

अपेक्षित लाभ

- **सटीक और व्यापक भूमि रिकॉर्ड** जिससे संपत्ति लेन-देन में पारदर्शिता बढ़ेगी
- **संपत्ति कर संग्रह** में सुधार जिससे नगरपालिका की आय बढ़ेगी
- **भूमि विवादों** में कमी क्योंकि स्वामित्व रिकॉर्ड अधिक स्पष्ट होंगे
- **शहरी योजना** में तेजी क्योंकि सटीक भौगोलिक डेटा उपलब्ध होगा
- **ऋण उपलब्धता** में सुधार क्योंकि कानूनी दस्तावेजों का डिजिटलीकरण होगा

नक्शा योजना भारत के शहरी भूमि रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है जो बेहतर शासन और शहरी विकास को बढ़ावा देगा

भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन में एआई का एकीकरण

प्रसंग: भारत अपनी न्यायपालिका प्रणाली और कानून प्रवर्तन को आधुनिक बनाने के लिए **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)** का उपयोग कर रहा है, जिससे मामले के बैकलॉग को कम किया जा सके, **कार्यक्षमता बढ़ाई जा सके** और न्याय को अधिक सुलभ बनाया जा सके। एआई-सक्षम कानूनी शोध, केस प्रबंधन और पूर्वानुमान आधारित पुलिसिंग इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव ला रहे हैं।

भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन प्रणाली में मौजूदा चुनौतियाँ

हालांकि भारत की कानूनी प्रणाली सुव्यवस्थित है, लेकिन इसमें कई प्रणालीगत चुनौतियाँ बनी हुई हैं:

- **मामलों का बैकलॉग** – राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड (NJDG) के अनुसार 5 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं।
- **न्याय में देरी** – जटिल दस्तावेजी प्रक्रियाएँ और प्रक्रियागत अक्षमताएँ न्यायिक प्रक्रिया को लंबा कर देती हैं।
- **मैनुअल केस प्रबंधन** – कागज आधारित प्रणाली न्यायिक कार्यों को धीमा करती है।
- **कानून प्रवर्तन से जुड़ी समस्याएँ** – पुलिसिंग की अक्षमताएँ, बढ़ते साइबर अपराध और सीमित संसाधन अपराध रोकथाम में बाधा डालते हैं।

न्यायपालिका में एआई के अनुप्रयोग

1. **एआई-सक्षम कानूनी शोध और केस प्रबंधन**

SUPACE (सुप्रीम कोर्ट पोर्टल फॉर असिस्टेंस इन कोर्ट एफिशिएंसी) – यह एआई-

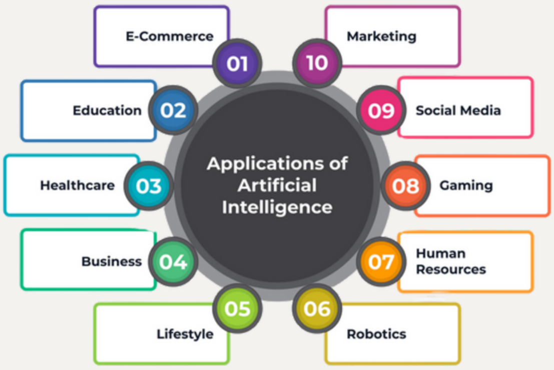

आधारित उपकरण न्यायाधीशों को कानूनी शोध में सहायता करता है।

- **एआई मॉडल बड़े कानूनी डेटा** का विश्लेषण करके मिसालें (precedents) खोजने, दस्तावेजीकरण को सुव्यवस्थित करने और शोध समय को कम करने में मदद करते हैं।

2. **पूर्वानुमानित न्याय और प्राथमिकता आधारित केस प्रबंधन**
- **एआई-आधारित विश्लेषण** अदालतों को मामलों के संभावित परिणामों का अनुमान लगाने और महत्वपूर्ण मामलों को प्राथमिकता देने में मदद करता है, जिससे विलंब कम होता है।
- **मामलों के खारिज होने या स्वीकृत** होने के पैटर्न का विश्लेषण कर न्यायिक कार्यक्षमता बढ़ाता है।

3. **वर्चुअल कोर्ट और एआई-सक्षम विवाद समाधान**
- **ई-कोर्ट्स वर्चुअल सुनवाई**, ऑनलाइन केस प्रबंधन और एआई-आधारित ऑनलाइन विवाद समाधान (ODR) को सक्षम करते हैं, जिससे छोटे मामले जल्दी निपटाए जाते हैं।

4. **एआई-सहायता प्राप्त कानूनी अनुवाद**
- SUVAS (सुप्रीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर) – यह एआई-आधारित प्रणाली कानूनी दस्तावेजों का वास्तविक समय में विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने में मदद करती है।

कानून प्रवर्तन और अपराध रोकथाम में एआई

1. **एआई-सक्षम निगरानी और चेहरा पहचान प्रणाली**
- CCTNS (क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क एंड सिस्टम्स) एआई-आधारित चेहरे की पहचान को एकीकृत करता है:
  - सीसीटीवी फुटेज से संदिग्धों की पहचान करता है।
  - लापता व्यक्तियों और अपराधियों को वास्तविक समय में ट्रैक करता है।
  - एआई-सक्षम भीड़ निगरानी से सार्वजनिक सुरक्षा बढ़ाता है।

2. **पूर्वानुमानित पुलिसिंग और अपराध विश्लेषण**
- एआई पिछले अपराध डेटा का विश्लेषण करके अपराधों का अनुमान लगाता है, हॉटस्पॉट की पहचान करता है और अपराधियों के व्यवहार को ट्रैक करता है।
- सोशल मीडिया और डिजिटल फुटप्रिंट का विश्लेषण कर साइबर खतरों का पता लगाता है।

3. **फॉरेंसिक जांच में एआई**
- एआई डिजिटल फॉरेंसिक्स को उन्नत बनाता है:
  - आवाज पहचान और डीपफेक की जांच करता है।
  - एआई-सक्षम डीएनए और फिंगरप्रिंट मिलान प्रणाली मामलों को तेजी से हल करने में मदद करती है।

4. **एआई चैटबॉट्स द्वारा नागरिक सहायता**
- एआई-आधारित पुलिस चैटबॉट नागरिकों को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करते हैं:
  - ऑनलाइन एफआईआर दर्ज करना।
  - मामले की स्थिति को ट्रैक करना।
  - सरल भाषा में कानूनी मार्गदर्शन देना।

एआई अपनाने में चुनौतियाँ

- **नैतिकता और पक्षपात की चिंताएँ** – एआई मॉडल ऐतिहासिक न्यायिक डेटा से पक्षपाती निष्कर्ष निकाल सकते हैं।
- **डेटा गोपनीयता और सुरक्षा** – एआई कानूनी और अपराध डेटाबेस पर निर्भर करता है, जिसके लिए मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी** – कई अदालतों और पुलिस स्टेशनों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, एआई अवसंरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की कमी है।
- **नियामक ढाँचा** – भारत में न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन में एआई उपयोग के लिए विशेष कानूनों की अनुपस्थिति है।

एआई एकीकरण के लिए सरकारी पहल

- **SUVAS & SUPACE** – न्यायिक सहायता और कानूनी अनुवाद के लिए एआई-आधारित उपकरण।
- **ई-कोर्ट्स (चरण III) परियोजना** – उच्च न्यायालयों में एआई और ब्लॉकचेन एकीकरण के लिए ₹7,210 करोड़ आवंटित।
- **CCTNS** (क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क एंड सिस्टम्स) – एआई-सक्षम राष्ट्रीय पुलिस डेटाबेस।
- **नीति आयोग की एआई रणनीति और एआई टास्क फोर्स** – एआई नियमन और कार्यान्वयन के लिए योजना तैयार कर रही है।

आगे की राह: स्मार्ट न्याय प्रणाली के लिए एआई

- **एआई नैतिकता दिशानिर्देश स्थापित करें** – एआई-आधारित कानूनी निर्णयों में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करें।
- **एआई अवसंरचना को मजबूत करें** – न्यायाधीशों और कानून प्रवर्तन अधिकारियों के लिए एआई प्रशिक्षण में निवेश करें।
- **जन-जागरूकता बढ़ाएँ** – नागरिकों को एआई-आधारित कानूनी संसाधनों के बारे में शिक्षित करें।
- **कानूनी क्षेत्र में एआई अनुसंधान को प्रोत्साहित करें** – शैक्षणिक और औद्योगिक भागीदारी के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा दें।

भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन में एआई का एकीकरण न्याय प्रक्रिया को तेज, निष्पक्ष और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है।

भारत की 'लुक ईस्ट' नीति अब 'एक्ट ईस्ट' नीति में बदल चुकी है

समाचार: भारत की विदेश नीति दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रति "लुक ईस्ट" से "एक्ट ईस्ट" में बदल गई है, जिसका उद्देश्य गहरे सहयोग, रणनीतिक साझेदारी और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देना है। हाल ही में भारत के उपराष्ट्रपति ने इस बदलाव को रेखांकित किया, जिससे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका स्पष्ट होती है।

ऐतिहासिक संदर्भ और विकास

1. **लुक ईस्ट नीति (1992 - 2014 से पहले)**
   - 1992 में प्रधानमंत्री **पी.वी. नरसिम्हा राव** द्वारा शुरू की गई।
   - **दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों** (ASEAN) के साथ व्यापार, सांस्कृतिक संबंध और आर्थिक सहयोग को प्राथमिकता दी गई।
   - बाद में नीति का विस्तार पूर्वी एशिया और ओशिनिया तक हुआ।
2. **मुख्य उपलब्धियां:**
- व्यापारिक बाधाओं में कमी, जिससे **वाणिज्यिक गतिविधियां** बढ़ीं।
- दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि।

3. **एक्ट ईस्ट नीति (2014 - वर्तमान)**
- 2014 में प्रधानमंत्री द्वारा "लुक ईस्ट" नीति को "एक्ट ईस्ट" में बदला गया, जिससे **निष्क्रिय सहयोग की बजाय सक्रिय साझेदारी** को बढ़ावा मिला।

मुख्य सुधार:

- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र** पर विशेष ध्यान, समुद्री सुरक्षा और आर्थिक भागीदारी को प्राथमिकता।
- **उत्तर-पूर्व भारत** को दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में मान्यता।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र** को रणनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना गया।

2014 ईस्ट एशिया समिट में घोषित "3C दृष्टिकोण":

1. **वाणिज्य (Commerce)** - व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना।
2. **संस्कृति (Culture)** - ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना।
3. **संयुक्तता (Connectivity)** - भौतिक और डिजिटल बुनियादी ढांचे का विकास।

एक्ट ईस्ट नीति के उद्देश्य और उपलब्धियां

1. **रणनीतिक विस्तार**
- भारत ने ASEAN से आगे अपने सहयोग को विस्तारित किया, जिसमें शामिल हैं:
  - **BIMSTEC** (बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल),
  - भारतीय महासागर रिम एसोसिएशन (IORA),
- **एशिया सहयोग** संवाद (Asia Cooperation Dialogue)।
- रक्षा सहयोग:
  - फिलीपींस को **ब्रह्मोस मिसाइलों की बिक्री**।
  - वियतनाम और अन्य प्रमुख साझेदारों के साथ सैन्य लॉजिस्टिक्स समझौते।

2. **आर्थिक और व्यापारिक संबंध**
- ASEAN के साथ **मुक्त व्यापार समझौतों** (FTAs) के माध्यम से आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा।
- **दक्षिण-पूर्व एशिया** से भारत में विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि।
- **इंडोनेशिया, वियतनाम, मलेशिया**, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर और ASEAN देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी।
- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन** (International Solar Alliance) के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा।

3. **सांस्कृतिक और सॉफ्ट पावर कूटनीति**
- साझा **रामायण और महाभारत परंपराओं** तथा बौद्ध विरासत के माध्यम से सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना।
- **बौद्ध सर्किट पर्यटन** को बढ़ावा देना, जिससे भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव को बढ़ावा मिले।

4. सांस्कृतिक सहयोग और कनेक्टिविटी

- **सांस्कृतिक कूटनीति और जनसंपर्क**
  - दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ रामायण महोत्सव जैसे कार्यक्रम आयोजित करना।
  - बौद्ध और हिंदू सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित कर जनसंपर्क को बढ़ावा देना।
- **संयुक्तता और बुनियादी ढांचे का विकास**
  - उत्तर-पूर्व भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में सशक्त बनाना।
- **प्रमुख परियोजनाएं:**
  - भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग – भूमि मार्गों को बेहतर बनाना।
  - कलादान मल्टी-मोडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना – व्यापार मार्गों को मजबूत करना।
  - री-टिड्डिम सड़क परियोजना एवं सीमा हाट – सीमा पार व्यापार को बढ़ावा देना।

चुनौतियां और सुधार के क्षेत्र

1. रणनीतिक और आर्थिक चुनौतियां

- चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) भारत की क्षेत्रीय पहल के लिए प्रतिस्पर्धा पैदा कर रही है।
- BCIM-EC (बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार आर्थिक गलियारा) भारत की संपर्क परियोजनाओं के लिए चुनौती बन रहा है।
- म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता क्षेत्रीय सुरक्षा और भारत की भागीदारी को प्रभावित कर सकती है।
- भारत के भारतमाला और सागरमाला परियोजनाओं में उत्तर-पूर्व भारत की कनेक्टिविटी अभी भी कमजोर है।

2. सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक चुनौतियां

- बौद्ध विरासत पर चीन के दावों से भारत के सांस्कृतिक प्रभाव को चुनौती मिल रही है।
- भारतीय विश्वविद्यालयों में दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषाओं (ख्मेर, Bahasa Indonesia, थाई, बर्मी) के सीमित प्रशिक्षण अवसर।

3. कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे की समस्याएं

- कलादान मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट परियोजना जैसी अवसंरचना परियोजनाओं में देरी।
- उत्तर-पूर्व भारत में अविकसित परिवहन एवं व्यापार सुविधाएं, जिससे व्यापार क्षमता प्रभावित होती है।

आगे की राह और निष्कर्ष

1. **उत्तर-पूर्व भारत** में बुनियादी ढांचे के विकास को सुदृढ़ करना ताकि निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित हो सके।
2. **चीन के बढ़ते** प्रभाव का मुकाबला करने के लिए अधिक निवेश और सुरक्षा सहयोग।
3. **व्यापार और परिवहन** बाधाओं को दूर करना, जिससे आर्थिक और रणनीतिक एकीकरण को गति मिले।
4. **भारत की जलवायु कूटनीति** और क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन में भूमिका को बढ़ावा देना।
5. **हिंद-प्रशांत क्षेत्र** में मध्य शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करना।

भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति देश को क्षेत्रीय नेतृत्व की ओर अग्रसर कर रही है, जिसमें आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक कूटनीति का उपयोग करके हिंद-प्रशांत क्षेत्र में प्रभावशाली साझेदारियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था पांच गुना बढ़ने की ओर

प्रसंग: भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था अगले दशक में पाँच गुना बढ़कर 44 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है, जिसका **श्रेय निजी क्षेत्र के निवेश**, सरकारी सुधारों और अंतरिक्ष आधारित अनुप्रयोगों में वृद्धि को जाता है। भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र में अब **तक ₹1,000 करोड़ का निवेश** आ चुका है, जो वाणिज्यिक अंतरिक्ष गतिविधियों की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है।

वैश्विक अंतरिक्ष उद्योग में भारत की वर्तमान स्थिति

- भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था वर्तमान में 8 अरब डॉलर की है, जो वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में **2-3% का योगदान** देती है।
- देश का लक्ष्य 2030 तक अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर **8% और 2047** तक 15% तक पहुंचाना है।

वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति

- **अंतरिक्ष कंपनियों की संख्या** के आधार पर भारत दुनिया में 5वें स्थान पर है।
- भारत में अब 400 से अधिक निजी अंतरिक्ष कंपनियां सक्रिय हैं।

भारत के अंतरिक्ष उद्योग में निजी खिलाड़ियों का उदय

- 2022 में केवल 1 अंतरिक्ष स्टार्टअप था, जो 2024 तक बढ़कर लगभग 200 हो गया।

निवेश में वृद्धि

- 2021: $67.2 मिलियन
- 2023: $124.7 मिलियन
- स्कायरूट एयरोस्पेस ने भारत का पहला निजी रॉकेट विक्रम-S लॉन्च किया, जिससे वाणिज्यिक उपग्रह प्रक्षेपण के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ।

भारत के अंतरिक्ष उद्योग में निजी क्षेत्र का नियमन

निजी क्षेत्र की भागीदारी को सुगम बनाने और विनियमित करने के लिए भारत ने निम्नलिखित संस्थाएं स्थापित की हैं:

1. **नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइजेशन सेंटर (IN-SPACe)**
   - अंतरिक्ष विभाग के तहत एक स्वायत्त एजेंसी।
   - निजी क्षेत्र की भागीदारी और अंतरिक्ष गतिविधियों के लिए एकल-खिड़की नोडल निकाय के रूप में कार्य करता है।
2. **न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL)**
   - इसरो से भारतीय उद्योगों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करने की जिम्मेदारी।
   - वाणिज्यिक उपग्रह प्रक्षेपण और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देता है।
3. **रक्षा मंत्रालय की निगरानी**
   - अंतरिक्ष क्षेत्र की गतिविधियां रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत आती हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजीकरण का महत्व

1. **लागत में कमी** – प्रतिस्पर्धा से मिशनों और उपग्रह प्रक्षेपण की लागत घटती है।
2. **नवाचार में वृद्धि** – निजी कंपनियों की भागीदारी से नई तकनीकों और अनुप्रयोगों को बढ़ावा मिलता है।
3. **अंतरिक्ष सेवाओं का वाणिज्यीकरण** – कृषि, आपदा प्रबंधन, शहरी योजना, नेविगेशन और संचार में अंतरिक्ष-आधारित सेवाओं का विस्तार।
4. **रणनीतिक स्वायत्तता** – निजी कंपनियों को स्वतंत्र निर्णय लेने की सुविधा, जिससे महत्वाकांक्षी परियोजनाएं तेजी से पूरी हो सकें।
5. **रोजगार सृजन और आत्मनिर्भरता** – घरेलू प्रतिभाओं को बढ़ावा, "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" को समर्थन, और नए रोजगार के अवसर।

अंतरिक्ष क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल

1. **अंतरिक्ष क्षेत्र सुधार (2020)**
   - निजी क्षेत्र की भागीदारी को अनुमति दी गई और IN-SPACe, इसरो और NSIL की भूमिकाओं को परिभाषित किया गया।
2. **स्पेस विजन 2047**
   - 2035: भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) की स्थापना।
   - 2040: भारत का चंद्रमा पर मानव मिशन।
   - 2028: गगनयान के बाद BAS का पहला मॉड्यूल।
   - 2032: नेक्स्ट जेनरेशन सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (NGLV)।
   - 2027: चंद्रयान-4 – चंद्रमा से सैंपल लाने का मिशन।
   - 2028: शुक्र ऑर्बिटर मिशन – शुक्र के वातावरण और जलवायु का अध्ययन।
3. **भारतीय अंतरिक्ष नीति, 2023**
   - गैर-सरकारी संस्थाओं (NGEs) के लिए समान अवसर सुनिश्चित किए गए।

4. ₹1,000 करोड़ वेंचर कैपिटल फंड

- अगले पांच वर्षों में अंतरिक्ष स्टार्टअप्स को समर्थन देने के लिए IN-SPACe द्वारा आवंटित फंड।

5. स्पेसटेक इनोवेशन नेटवर्क (SpIN)

- अंतरिक्ष उद्योग में स्टार्टअप्स और लघु-मध्यम उद्यमों (SMEs) को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी।

6. अंतरिक्ष क्षेत्र में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति

- संशोधित एफडीआई नीति के तहत, पूर्ण विदेशी स्वामित्व की अनुमति, जिससे निवेश आकर्षित किया जा सके।

आगे की राह

1. **निजी क्षेत्र की भूमिका को मजबूत करना**
   - अनुसंधान, निर्माण और उपग्रह प्रक्षेपण में अधिक निजी निवेश को प्रोत्साहित करना।
2. **वैश्विक एकीकरण**
   - भारतीय अंतरिक्ष कंपनियों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में शामिल कर प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।
3. **स्टार्टअप्स को समर्थन**
   - नए उद्यमों के लिए वित्तपोषण और मेंटरशिप कार्यक्रमों का विस्तार।
4. **अंतरिक्ष अवसंरचना के विकास में तेजी**
   - वाणिज्यिक मिशनों के लिए अंतरिक्ष केंद्रों और लॉन्च स्थलों के विकास को तेज करना।
5. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना**
   - NASA, ESA, JAXA और अन्य उभरती हुई अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ साझेदारी, संयुक्त मिशनों और प्रौद्योगिकी साझाकरण के लिए।

निजी क्षेत्र की भागीदारी, सरकारी समर्थन और समृद्ध स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के साथ, भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और नवाचार में एक वैश्विक नेता बनने की दिशा में अग्रसर है।

सरकार की प्रमुख योजना के तहत 10,000 एफपीओ स्थापित किए गए

समाचार: सरकार की प्रमुख योजना के तहत 10,000 एफपीओ स्थापित किए गए
केंद्र सरकार ने अपनी प्रमुख योजना के तहत 10,000 किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) की स्थापना का लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। प्रधानमंत्री ने बिहार के भागलपुर में 10,000वें एफपीओ का शुभारंभ किया, जो मक्का, केला और धान जैसी प्रमुख फसलों पर केंद्रित है।

योजना के बारे में

- केंद्र प्रायोजित योजना: 2020 में शुरू की गई थी।
- बजट प्रावधान: ₹6,865 करोड़ (2027-28 तक)।

किसान भागीदारी:

- **30 लाख किसान** एफपीओ से जुड़े।
- **40% सदस्य महिला** किसान, जिससे कृषि में लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा मिला।

योजना के उद्देश्य

- नए एफपीओ को उनकी स्थापना के पांच वर्षों तक सहायता प्रदान करना।
- किसानों को कृषि उद्यमशीलता कौशल विकसित करने के लिए प्रशिक्षण देना।
- छोटे और सीमांत किसानों को बाजार और वित्तीय संसाधनों से जोड़ना।

एफपीओ क्या हैं?

किसान उत्पादक संगठन (FPO) किसानों का एक समूह होता है, **जो कृषि उत्पादन, विपणन और वित्तीय संसाधनों** तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक रूप से कार्य करता है।

कानूनी ढांचा:
एफपीओ निम्नलिखित के तहत पंजीकृत होते हैं:

1. **कंपनी अधिनियम, भाग IXA**
2. **संबंधित राज्यों के सहकारी समिति अधिनियम**

संचालन की निगरानी:

कृषि मंत्रालय के तहत "**लघु किसान कृषि व्यापार संघ (SFAC)**" एफपीओ के गठन और संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एफपीओ क्यों आवश्यक हैं?

भारत का कृषि क्षेत्र **छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों** पर आधारित है, जो कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं:

छोटे किसानों की प्रमुख चुनौतियाँ

- **उन्नत कृषि तकनीक**, उच्च गुणवत्ता वाले बीज और उर्वरकों की सीमित उपलब्धता।
- **वित्तीय संसाधनों की कमी**, जिससे आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाना कठिन होता है।
- कमजोर सौदेबाजी शक्ति के कारण बाजार में अनुचित मूल्य मिलना।
- भंडारण, परिवहन और लॉजिस्टिक अवसंरचना की कमी।

एफपीओ इन समस्याओं का समाधान कैसे करते हैं

- **सामूहिककरण:** किसानों की सौदेबाजी शक्ति को मजबूत करता है।
- **बेहतर इनपुट पहुंच: उचित मूल्य पर उच्च गुणवत्ता वाले बीज, उर्वरक और कीटनाशक सुनिश्चित करता है।**
- **बाजार से जुड़ाव: किसानों को उनके उत्पाद के लिए बेहतर मूल्य दिलाने में मदद करता है।**
- **ऋण और वित्तीय सहायता: किसानों को ऋण और वित्तीय सहायता प्राप्त करने में मदद करता है।**
- **तकनीक अपनाने में सहायता: आधुनिक कृषि तकनीकों और डिजिटल प्लेटफॉर्म को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।**

एफपीओ द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं

1. किफायती कृषि इनपुट तक पहुंच

- थोक दरों पर उच्च गुणवत्ता वाले बीज, उर्वरक और कीटनाशक की आपूर्ति करता है।

2. कृषि मशीनरी और उपकरण

- ट्रैक्टर, टिलर, स्प्रिंकलर और हार्वेस्टर किराये पर उपलब्ध कराकर लागत को कम करता है।

3. मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण

- सफाई, छंटाई, ग्रेडिंग और पैकेजिंग सेवाएं प्रदान करता है।
- किफायती दरों पर ऑन-फार्म प्रसंस्करण सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

4. लॉजिस्टिक्स और भंडारण सहायता

- साझा लागत आधार पर भंडारण, परिवहन और लोडिंग/अनलोडिंग की सुविधा प्रदान करता है।

5. बाजार से जुड़ाव और बेहतर मूल्य प्राप्ति

- **उत्पादों को एकत्र कर खरीदारों** और विपणन चैनलों के साथ बेहतर मूल्य वार्ता करता है।
- **किसानों को ई-नाम** (इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार) और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों तक पहुंचने में मदद करता है।

एफपीओ के समक्ष चुनौतियां

- **जटिल नियामक** और अनुपालन प्रक्रियाएं।
- **भंडारण, प्रसंस्करण** और परिवहन के लिए कमजोर बुनियादी ढांचा।
- **जागरूकता और विश्वास** की कमी के कारण किसानों की कम भागीदारी।
- उत्पादों को बेचने के लिए **डिजिटल प्लेटफॉर्म** को अपनाने में सीमित प्रगति।
- **जलवायु जोखिमों** और बाजार उतार-चढ़ाव की असुरक्षा।

आगे की राह

इस योजना के तहत **10,000 एफपीओ की स्थापना** भारतीय कृषि के लिए एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर है।

एफपीओ पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम

- **कम ब्याज दर पर ऋण** की उपलब्धता बढ़ाकर वित्तीय सहायता में सुधार।
- **बेहतर भंडारण और प्रसंस्करण सुविधाओं** के साथ बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म** का उपयोग बढ़ाकर बाजार तक बेहतर पहुंच और मूल्य प्राप्ति सुनिश्चित करना।
- **चरम मौसम घटनाओं** से जोखिम कम करने के लिए जलवायु-लचीली कृषि को बढ़ावा देना।
- **जागरूकता कार्यक्रमों** का विस्तार कर अधिक किसानों की भागीदारी सुनिश्चित करना।

निष्कर्ष

- सामूहिककरण को बढ़ावा देकर, **बाजार पहुंच को मजबूत करके** और संस्थागत समर्थन प्रदान करके, एफपीओ पहल लाखों छोटे और सीमांत किसानों को सशक्त बना रही है।
- यह **योजना कृषि में महिलाओं की भागीदारी** को प्रोत्साहित करने और ग्रामीण आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
- **नीतिगत समर्थन**, बुनियादी ढांचे के सुधार और डिजिटल कनेक्टिविटी में निरंतर वृद्धि के साथ, एफपीओ भारत के कृषि परिवर्तन की रीढ़ बनने के लिए तैयार हैं।

NEWS IN BRIEF

NEP 2020 के तहत त्रिभाषा नीति

समाचार: केंद्र ने तमिलनाडु सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति **(NEP) 2020** में प्रस्तावित त्रिभाषा सूत्र का विरोध करने के कारण समग्र शिक्षा योजना के तहत राज्य को मिलने वाली धनराशि रोक दी है।

तमिलनाडु द्विभाषा नीति (तमिल और अंग्रेजी) का पालन करता है और हिंदी का विरोध करता है, इसे अपनी भाषाई पहचान के लिए खतरा मानता है।

त्रिभाषा सूत्र क्या है?

- पहली बार NEP 1968 में लागू किया गया था और NEP 2020 में इसे बनाए रखा गया।
- राज्यों को कम से कम दो भारतीय भाषाओं सहित तीन भाषाएं चुनने की स्वतंत्रता।
- गैर-हिंदी राज्यों में स्थानीय भाषा, हिंदी और अंग्रेजी पढ़ाना अनिवार्य।
- संस्कृत को एक वैकल्पिक विकल्प के रूप में प्रोत्साहित किया गया।

महत्व

- बहुभाषी कौशल और संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाता है।
- राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।
- रोजगार के अवसरों और राज्यों के बीच गतिशीलता को बढ़ाता है।
- क्षेत्रीय भाषाओं को संरक्षित करता है और उनके विलुप्त होने से बचाता है।

चिंताएं

- हिंदी थोपने की आशंका, विशेष रूप से तमिलनाडु और कर्नाटक में।
- अतिरिक्त भाषाओं के लिए योग्य शिक्षकों की कमी।
- छात्रों पर शैक्षणिक बोझ बढ़ने की संभावना।
- फ्रेंच, मंदारिन जैसी वैश्विक भाषाओं की उपेक्षा की संभावना।

आगे की राह

- केंद्र और राज्यों के बीच संवाद के माध्यम से संतुलित समाधान आवश्यक।
- शिक्षा एक **समवर्ती सूची** (Concurrent List) का विषय है, इसलिए सहयोग जरूरी।
- नीतिगत मतभेदों के कारण **समग्र शिक्षा योजना** की धनराशि बाधित नहीं होनी चाहिए।

प्रमुख शिक्षा योजनाएं

- **पीएम श्री (2022-27):** 14,500 सरकारी स्कूलों को आदर्श विद्यालयों में बदला जाएगा।
- **समग्र शिक्षा अभियान (SSA):**
    - प्राथमिक से कक्षा 12 तक की शिक्षा को कवर करता है।
    - NEP 2020 के तहत बुनियादी साक्षरता, व्यावसायिक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण पर जोर।
    - राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

सहयोगी और लचीले दृष्टिकोण से समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित होगी।

ग्रीनलैंड में ग्लेशियर आइस एल्गी बर्फ के पिघलने की गति तेज कर रही हैं

- **आइस एल्गी का प्रसार:** गहरे रंग की माइक्रोएल्गी तेज़ी से खुली बर्फीली सतहों पर फैलती हैं, जिससे बर्फ का रंग गहरा हो जाता है।
- **बर्फ की परावर्तकता में कमी:** इन एल्गी का गहरा पिगमेंट ऐल्बेडो (सूर्य प्रकाश परावर्तन क्षमता) को कम करता है, जिससे बर्फ अधिक गर्मी अवशोषित करती है और पिघलने की गति तेज़ हो जाती है।
- **कठिन परिस्थितियों में जीवित रहने की क्षमता:** आइस एल्गी फॉस्फोरस संग्रहीत कर सकती हैं और उच्च कार्बन-टू-न्यूट्रिएंट अनुपात बनाए रखती हैं, जिससे वे पोषक तत्वों की कमी के बावजूद कठोर जलवायु में जीवित रह पाती हैं।
- **समुद्र स्तर में वृद्धि:** ग्रीनलैंड की बर्फ तेजी से पिघलने से वैश्विक समुद्र स्तर में महत्वपूर्ण वृद्धि हो रही है।
- **महासागरीय प्रवाह में बाधा:** पिघलती बर्फ से मीठे पानी की अधिक मात्रा महासागर में मिलती है, जिससे एटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) सहित वैश्विक महासागरीय धाराओं में गड़बड़ी उत्पन्न हो सकती है।
- **आर्कटिक गर्मी में तीव्र वृद्धि:** गहरी होती बर्फ अधिक सौर ऊर्जा अवशोषित करती है, जिससे आर्कटिक क्षेत्र में तापमान तेजी से बढ़ रहा है, जो वैश्विक औसत से दोगुना अधिक है।
- **वैश्विक प्रभाव:** आइस एल्गी केवल ग्रीनलैंड तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अल्प्स, हिमालय और अलास्का जैसे अन्य ग्लेशियर क्षेत्रों में भी देखी गई हैं, जो इनके व्यापक पर्यावरणीय प्रभाव को दर्शाता है।
- **जलवायु अनुसंधान की आवश्यकता:** जलवायु परिवर्तन पूर्वानुमानों को अधिक सटीक बनाने और प्रभावी समाधान विकसित करने के लिए आइस एल्गी जैसे जैविक कारकों को जलवायु मॉडल में शामिल करना आवश्यक है।

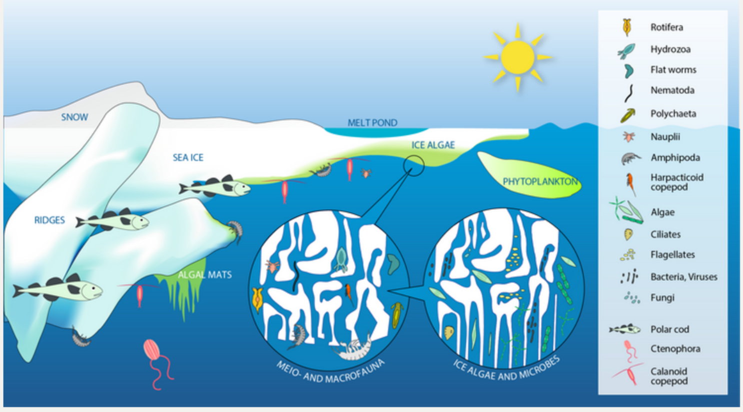

अली आई लिगांग उत्सव

समाचार: असम की सबसे बड़ी जनजातीय समुदाय, मिसिंग जनजाति, ने हाल ही में अली आई लिगांग उत्सव मनाया।

उत्सव के बारे में

- यह पर्व **फागुन (फरवरी-मार्च) महीने** के पहले बुधवार को मनाया जाता है और कृषि, परंपरा व सांस्कृतिक विरासत से गहराई से जुड़ा है।
- इसे ग्रामीण **मिसिंग गांवों में सदियों** से मनाया जा रहा है, जो समुदाय के झूम खेती से स्थायी धान की खेती की ओर बदलाव को दर्शाता है।
- उत्सव की शुरुआत **लैटम टॉमचार** (उत्सव ध्वज) फहराने से होती है, इसके बाद डोनी पोलो (सूर्य और चंद्र देवता) को कृषि समृद्धि के लिए अर्पण किया जाता है।
- पुरुष और **महिलाएं गुमराग नृत्य** करते हैं, जो आनंद और समृद्धि का प्रतीक है।

लेपाक्षी मंदिर और यूनेस्को विरासत मान्यता

समाचार: इतिहासकारों ने सरकार से लेपाक्षी मंदिर को यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल करने के लिए आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया है।

लेपाक्षी मंदिर के बारे में:

- यह मंदिर **आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी** में स्थित है और 16वीं शताब्दी की एक अद्भुत स्थापत्य कृति है।
- **द्रविड़ शैली में निर्मित,** यह मंदिर अपनी जटिल पत्थर की नक्काशी, भित्ति चित्रों और विशाल एकाश्म (मोनोलिथिक) संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध है।
- यह **भगवान वीरभद्र को समर्पित** है, जो भगवान शिव का एक उग्र रूप माने जाते हैं।
- मंदिर परिसर में दुनिया की **सबसे बड़ी एकाश्म नंदी (बैल)** प्रतिमा भी स्थित है।
- मार्च 2023 में, **यूनेस्को ने लेपाक्षी वीरभद्र मंदिर** परिसर को अपनी अस्थायी धरोहर सूची में शामिल किया।

वर्तमान स्थिति:

- राज्य और केंद्र सरकार को **मंदिर की वास्तुकला**, मूर्तिकला, भित्ति चित्रों और **एकाश्म संरचनाओं** का विस्तृत अध्ययन करना आवश्यक है।
- **यूनेस्को विश्व धरोहर** का दर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया के तहत केंद्र सरकार को एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।

टनकिन की खाड़ी और वियतनाम का समुद्री दावा

समाचार: वियतनाम के विदेश मंत्रालय ने टनकिन की खाड़ी में अपनी समुद्री सीमा को परिभाषित करने वाला एक नक्शा जारी किया है, जिससे अपनी **संप्रभुता, अधिकारों** और क्षेत्राधिकार की रक्षा की जा सके।

यह कदम चीन द्वारा **मार्च 2023 में एकतरफा रूप से नई समुद्री सीमा** प्रकाशित करने के बाद आया है, जिसके कारण वियतनाम ने राजनयिक विरोध दर्ज कराया।

टनकिन की खाड़ी के बारे में:

- **दक्षिण चीन सागर** का उत्तर-पश्चिमी विस्तार, जो चीन **हैनान द्वीप** और उत्तरी वियतनाम से घिरा हुआ है।
- इसमें **रेड रिवर (लाल नदी)** का प्रवाह होता है और यह वियतनाम (बेन थूई, हैफोंग) और चीन (बेइहाई) के प्रमुख बंदरगाहों का केंद्र है।
- **वियतनाम युद्ध में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका** रही है; टनकिन की खाड़ी घटना (1964) के दौरान अमेरिकी नौसैनिक जहाजों पर कथित हमलों के चलते अमेरिका ने सीधे सैन्य हस्तक्षेप किया था।
- **2000 में, वियतनाम और चीन ने टनकिन** की खाड़ी समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें UNCLOS 1982 के तहत अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) की सीमाओं को परिभाषित किया गया।

मंदीजनित मुद्रास्फीति (STAGFLATION): कारण, प्रभाव और समाधान

समाचार में: पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कठोर व्यापार नीतियों के कारण मंदीजनित मुद्रास्फीति (Stagflation) को लेकर चिंताएँ फिर से उभर रही हैं।

मंदीजनित मुद्रास्फीति क्या है?

यह एक आर्थिक स्थिति है, जिसमें उच्च मुद्रास्फीति, धीमी आर्थिक वृद्धि और बढ़ती बेरोजगारी एक साथ उत्पन्न होती हैं।

मंदीजनित मुद्रास्फीति के कारण:

- **आपूर्ति में झटके:** तेल की कीमतों में अचानक वृद्धि (जैसे 1970 के दशक का तेल संकट) उत्पादन लागत बढ़ाती है, जिससे मुद्रास्फीति और आर्थिक मंदी उत्पन्न होती है।
- **गलत आर्थिक नीतियाँ:** अत्यधिक धन आपूर्ति, सरकारी खर्च में वृद्धि और व्यापार प्रतिबंध मुद्रास्फीति को बढ़ा सकते हैं, लेकिन उत्पादकता में सुधार नहीं करते।
- **संरचनात्मक समस्याएँ:** औद्योगिक उत्पादन में गिरावट, श्रम बाजार की अक्षमताएँ और कम निवेश आर्थिक ठहराव में योगदान करते हैं।

मंदीजनित मुद्रास्फीति से निपटने की रणनीतियाँ:

- **आपूर्ति-पक्ष सुधार:** उत्पादन क्षमता में वृद्धि और आपूर्ति बाधाओं को कम करना।
- **संतुलित मौद्रिक और राजकोषीय नीतियाँ:** मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरों और सरकारी खर्च में समायोजन।
- **ऊर्जा और व्यापार स्थिरता:** ऊर्जा आपूर्ति को स्थिर बनाए रखना और व्यापार प्रतिबंधों को कम करना, जिससे आर्थिक लचीलापन बढ़े।

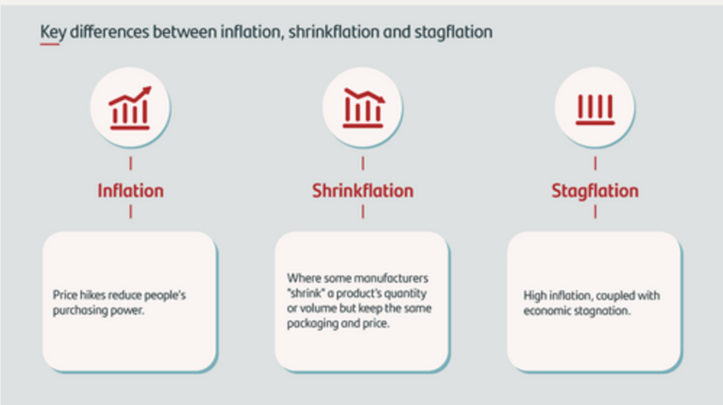

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

प्रसंग: हर वर्ष **21 फरवरी को मनाया जाता है**, यह भाषाई विविधता के महत्व और विलुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा की आवश्यकता को उजागर करता है।

यह दिवस **बांग्लादेश द्वारा 1952** के बंगाली भाषा आंदोलन की स्मृति में शुरू किया गया था और 1999 में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त हुआ। तब से, 2000 से इसे वैश्विक स्तर पर मनाया जा रहा है।

भारत की भाषाई विविधता और चुनौतियाँ:

- भारत में **19,500+ भाषाएँ और बोलियाँ** हैं, जिनमें से 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं (2018 जनगणना)।
- यूनेस्को के अनुसार, **42 भारतीय भाषाएँ गंभीर रूप** से संकटग्रस्त हैं, जो दुनिया में सबसे अधिक हैं।
- **197 भाषाएँ लुप्तप्राय हैं और 250+** भाषाएँ पिछले 60 वर्षों में विलुप्त हो चुकी हैं।
- विशेष रूप से **पूर्वोत्तर भारत और अंडमान-निकोबार** की भाषाएँ अत्यधिक संकटग्रस्त हैं।

भाषाओं के विलुप्त होने के कारण:

1. **आधुनिकीकरण:** शिक्षा और नौकरियों के लिए हिंदी और अंग्रेजी जैसी प्रभावशाली भाषाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
2. **बोलने वालों की कमी:** कम बोलने वालों के कारण भाषाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी आगे नहीं बढ़ पातीं।
3. **प्रमुख भाषाओं का वर्चस्व:** क्षेत्रीय भाषाएँ दैनिक जीवन में अपना महत्व खो रही हैं।
4. **लिपि का अभाव:** कई संकटग्रस्त भाषाएँ लिखित रूप में दर्ज नहीं हैं, जिससे उनका संरक्षण कठिन हो जाता है।

संरक्षण के प्रयास:

- **पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया** (PLSI): समुदायों की भाषाओं का दस्तावेजीकरण करता है।
- **SPPEL (संरक्षण एवं संवर्धन योजना):** मैसूर स्थित केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL) संकटग्रस्त भाषाओं का दस्तावेजीकरण करता है।
- **AI4Bharat पहल:** 22 भारतीय भाषाओं में स्पीच रिकग्निशन और अनुवाद के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करता है।
- **सिधेला आर्काइव** (सिक्किम विश्वविद्यालय): पूर्वोत्तर भारत की संकटग्रस्त भाषाओं पर शोध करता है।

निष्कर्ष: भाषाओं का संरक्षण **सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक ज्ञान और पहचान** के लिए अत्यंत आवश्यक है। जब कोई भाषा विलुप्त होती है, तो उसके साथ एक पूरी संस्कृति, **परंपरा और इतिहास भी लुप्त** हो जाता है। इसलिए, भाषाई विविधता का संरक्षण सांस्कृतिक स्थिरता और समावेशी विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत का बढ़ता हुआ एलएनजी आयात

समाचार: भारत का अमेरिका से **एलएनजी आयात 2024 में 7.14 बीसीएम** तक पहुंच गया, जो सालाना 71% वृद्धि है। अमेरिका ने यूएई को पीछे छोड़ते हुए कतर के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बन गया।

एलएनजी और भारत में इसका महत्व:

- **एलएनजी (लिक्विफाइड नेचुरल गैस)** मुख्य रूप से मीथेन-आधारित होती है और इसे -162°C तक ठंडा करके परिवहन योग्य बनाया जाता है।
- **भारत,** जो दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है, उद्योगों, बिजली उत्पादन और सिटी गैस नेटवर्क के लिए एलएनजी पर निर्भर करता है।
- **प्रमुख कारक:** ऊर्जा विविधीकरण, औद्योगिक मांग, शहरी गैस विस्तार और 2070 तक नेट-जीरो लक्ष्य।

चुनौतियाँ और सरकारी पहल:

मुख्य चुनौतियाँ:

- **अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा:** सीमित पाइपलाइन नेटवर्क, भीड़भाड़ वाले टर्मिनल और कम भंडारण क्षमता।

सरकारी प्रयास:

1. **ऊर्जा संक्रमण नीति:** 2030 तक गैस की हिस्सेदारी 15% करने का लक्ष्य।
2. **राष्ट्रीय गैस ग्रिड** और सिटी गैस वितरण (CGD) का विस्तार।
3. **गैस मूल्य निर्धारण** सुधार और SATAT पहल (बायो-CNG को बढ़ावा देना)।

आगे की राह: निवेश को बढ़ावा देना, **नियामकीय प्रक्रियाओं को सरल बनाना,** छोटे पैमाने के **एलएनजी संयंत्र** स्थापित करना और निजी-सार्वजनिक भागीदारी (PPP) को बढ़ावा देना भारत के एलएनजी पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने में मदद करेगा।

नैनोक्रिस्टल के क्वांटम गुण एवं गुरुत्वाकर्षण

समाचार: वैज्ञानिकों ने प्रस्ताव दिया है कि **नैनोक्रिस्टल के क्वांटम स्पिन** का उपयोग यह जांचने के लिए किया जाए कि क्या **गुरुत्वाकर्षण क्वांटम यांत्रिकी** का पालन करता है।

पृष्ठभूमि:

- **सामान्य सापेक्षता** (General Relativity) गुरुत्वाकर्षण की व्याख्या करती है, जबकि क्वांटम यांत्रिकी अन्य मौलिक बलों को नियंत्रित करती है।
- वैज्ञानिक यह पता लगाना चाहते हैं कि क्या **गुरुत्वाकर्षण भी एक क्वांटम बल** है।

नैनोक्रिस्टल और क्वांटम स्पिन:

- **नैनोक्रिस्टल (1-100 nm):** ये क्वांटम गुण दर्शाते हैं, जैसे परिवर्तित चालकता, चुम्बकीयता और प्रकाश अवशोषण।
- **क्वांटम स्पिन:** यह एक चुम्बकीय क्षेत्र से प्रभावित होता है और मापन से पहले सुपरपोजिशन अवस्था में रहता है।

महत्त्व:

- यह प्रयोग **पारंपरिक गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत** को चुनौती दे सकता है या मौलिक बलों की हमारी समझ को नया रूप दे सकता है।

Unifying quantum theory and general relativity

Context: A team of scientists have explored quantum effects on radiation from black holes due to falling atoms, shedding light on unifying quantum theory and general relativity.

About Quantum theory and General Relativity

Aspects	Quantum Theory	General Relativity by Albert Einstein
Scope	Deals with microscopic particles and their interactions	Describes the motion of bigger objects in a gravitational field
Scale	Operates at the quantum (subatomic) level	Applies to cosmological (large-scale) phenomena like Planets, Stars
Fundamental Theory	Explains the behavior of matter and energy at small scales	Describes the force of gravity at a cosmic level
Key Phenomena	Superposition, Entanglement, Wave-particle duality	Time dilation, Gravitational waves, Curved spacetime
Examples	Superposition: A particle can exist in multiple states simultaneously.E.g., Schrödinger's cat, which can be both alive and dead at once	Time Dilation: Time passes slower in a stronger gravitational field e.g., Clocks on GPS satellites run slightly faster than on Earth

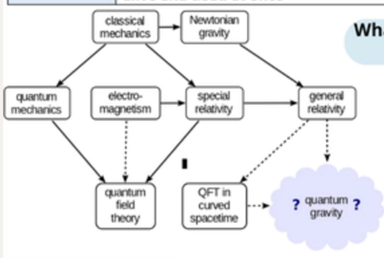

What are the issues of unifying quantum theory and general relativity?

Both the theories are inherently incompatible as one describes the microscopic behavior of particles (quantum theory), while the other explains the gravitational interactions at cosmic scales (general relativity). This conflict is known as the problem of quantum gravity.

टी हॉर्स रोड

समाचार: भारत में चीन के राजदूत ने भारत-चीन व्यापार को **तिब्बत के माध्यम से जोड़ने** में टी हॉर्स रोड के ऐतिहासिक महत्व पर जोर दिया।

टी हॉर्स रोड के बारे में:

प्राचीन व्यापार मार्ग जो **चीन, तिब्बत और भारत को जोड़ता** था, **तांग** (618-907 CE) वंश के समय से सक्रिय रहा है।

- चीनी **चाय के बदले तिब्बती घोड़ों** का व्यापार किया जाता था, जिससे एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नेटवर्क बना।
- इसके दो प्रमुख मार्ग थे, जो **दाली और लिजियांग** (युन्नान) से होकर ल्हासा तक पहुँचते थे, जहाँ से भारत, नेपाल और बांग्लादेश की ओर शाखाएँ निकलती थीं।
- **बौद्ध भिक्षु यीचिंग (635-713 ईस्वी)** ने इस व्यापार मार्ग पर चीनी, वस्त्र, चावल की नूडल्स, सोना, केसर और औषधीय जड़ी-बूटियों जैसे सामानों के आदान-प्रदान का विवरण दिया था।

पगड़ी संभाल जट्टा आंदोलन

समाचार: पंजाब-हरियाणा सीमाओं पर विरोध कर रहे किसानों ने **23 फरवरी को अजीत सिंह के सम्मान में पगड़ी संभाल** दिवस के रूप में मनाया।

आंदोलन के बारे में:

1907 में अजीत सिंह द्वारा **दमनकारी ब्रिटिश** कृषि कानूनों के खिलाफ शुरू किया गया आंदोलन।

आंदोलन के बारे में:

- **1907 में अजीत सिंह** द्वारा दमनकारी **ब्रिटिश कृषि कानूनों के खिलाफ** शुरू किया गया।
- **नारा: "पगड़ी संभाल जट्टा"** – जो आत्मसम्मान और सम्मान का प्रतीक था।

विरोध किए गए कानून:

- **पंजाब भूमि विलगन अधिनियम, 1900** – किसानों की भूमि बेचने/बंधक रखने के अधिकारों को सीमित किया।
- **पंजाब भूमि उपनिवेश अधिनियम, 1906** – चेनाब कॉलोनी में भूमि पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित किया।
- **दोआब बारी अधिनियम, 1907** – किसानों को अनुबंधित मजदूर बना दिया।
- किसानों ने भूमि और सिंचाई पर भारी करों के खिलाफ भी विरोध किया।

प्रभाव:

- ब्रिटिश शासन के खिलाफ **शुरुआती किसान आंदोलनों** में से एक था।
- **बड़े पैमाने पर विरोध**, सविनय अवज्ञा और ब्रिटिश प्रशासन पर दबाव बढ़ा।
- ब्रिटिश सरकार को कुछ **दमनकारी प्रावधान** वापस लेने पर मजबूर किया।
- **ग़दर आंदोलन** और भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रेरणा दी।

अजीत सिंह (1881-1947):

- **खटकर कलां**, पंजाब के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी।
- **लाला हरदयाल और मैडम कामा** जैसे क्रांतिकारियों के साथ यूरोप में कार्य किया।
- **भगत सिंह के गुरु** और मार्गदर्शक थे।
- 1909 से 1947 तक ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के कारण **निर्वासन** में रहे।
- **15 अगस्त 1947** को भारत की स्वतंत्रता के दिन उनका **निधन** हुआ।

एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड (AOR)

समाचार: सुप्रीम कोर्ट ने एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड (AoR) द्वारा अन्य वकीलों को उनके स्थान पर पेश होने की अनुमति देने पर चिंता जताई है।

एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड (AOR) कौन होता है?

- एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड (AOR) वह **वकील होता है जिसे सुप्रीम कोर्ट में सीधे ग्राहकों की ओर से** याचिका दायर करने, कार्रवाई करने और बहस करने की अनुमति होती है।
- AOR की भूमिका भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 145(1)** के तहत निर्धारित की गई है, जो सुप्रीम कोर्ट को अपनी प्रक्रियाओं को विनियमित करने का अधिकार देता है।
- सुप्रीम कोर्ट नियम, 2013 के तहत, किसी वकील को AOR के रूप में योग्य बनने के लिए **विशेष पात्रता मानदंड** पूरे करने होते हैं।

भारतीय चिकित्सा पद्धति के लिए राष्ट्रीय आयोग (NCISM)

प्रसंग: राष्ट्रीय **भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग** (NCISM) ने आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा कॉलेजों को नियमों के अनुपालन को लेकर सख्त चेतावनी जारी की है।

NCISM के बारे में:

- **वैधानिक निकाय:** NCISM अधिनियम, 2020 के तहत स्थापित, यह आयोग भारत में भारतीय चिकित्सा प्रणाली (ISM) की शिक्षा और चिकित्सा पद्धतियों को नियंत्रित करता है।
- **आयुष मंत्रालय के अधीन:** यह आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, **सोवा-रिग्पा** और होम्योपैथी के चिकित्सा शिक्षा और व्यावसायिक मानकों की निगरानी करता है।

शासन बोर्ड:

1. आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा बोर्ड
2. यूनानी, सिद्ध और सोवा-रिग्पा चिकित्सा बोर्ड

उद्देश्य:

- **गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा पेशेवर तैयार करना:** भारतीय चिकित्सा प्रणाली के चिकित्सकों के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण और नैतिक मानकों का नियमन करना।
- **अनुसंधान और आधुनिकीकरण को बढ़ावा देना:** पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ वैज्ञानिक नवाचारों का एकीकरण प्रोत्साहित करना।
- **चिकित्सा संस्थानों का मूल्यांकन:** शैक्षणिक और अधोसंरचनात्मक मानकों को सुनिश्चित करने के लिए कॉलेजों का समय-समय पर निरीक्षण और मूल्यांकन करना।

एआई का उपयोग एंटीबायोटिक प्रतिरोध से निपटने के लिए

समाचार: IIIT-Delhi और ICMR के शोधकर्ताओं ने AMRSense नामक एक एआई टूल विकसित किया है, जो अस्पताल डेटा का विश्लेषण करके वास्तविक समय में **एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR)** पर नज़र रखता है।

AMRSense के बारे में:
- **वैश्विक, राष्ट्रीय और अस्पताल** स्तर पर AMR निगरानी को बेहतर बनाता है।
- **अस्पताल के कल्चर टेस्ट** रिपोर्ट्स (रक्त, मूत्र, थूक, मवाद आदि) का उपयोग करके प्रतिरोध पैटर्न की भविष्यवाणी करता है।
- डेटा-आधारित जानकारी देकर एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप को सशक्त बनाता है।

एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR) क्या है?
- **AMR तब होता है जब सूक्ष्मजीव** विकसित होकर दवाओं के प्रति प्रतिरोधी हो जाते हैं, जिससे संक्रमण का इलाज कठिन हो जाता है।
- यह **संक्रामक रोगों, सर्जरी, कैंसर** उपचार और अंग प्रत्यारोपण की सफलता को खतरे में डाल सकता है।

AMR के प्रमुख कारण:
- **अत्यधिक एवं गलत उपयोग:** भारत में अस्पताल के 71.9% रोगियों को एंटीबायोटिक्स दी जाती हैं (NCDC, 2023)।
- **स्व-चिकित्सा और अधूरी खुराक:** अधूरी दवा लेने से प्रतिरोधी बैक्टीरिया जीवित रह जाते हैं।
- **कृषि में एंटीबायोटिक्स का उपयोग:** मवेशियों में वृद्धि बढ़ाने के लिए दी जाने वाली दवाएं खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर जाती हैं।
- **खराब स्वच्छता:** दूषित पानी से प्रतिरोधी बैक्टीरिया फैलते हैं।

AMR से निपटने में एआई की भूमिका:
- **प्रारंभिक प्रकोप का पता लगाना:** एआई अस्पताल डेटा का विश्लेषण करके नए AMR रुझानों को ट्रैक करता है।
- **तेज़ निर्णय-निर्माण:** AMRSense प्रतिरोध पैटर्न की भविष्यवाणी करता है, जिससे सही एंटीबायोटिक दवाएं दी जा सकती हैं।
- **समग्र निगरानी:** अस्पताल, फार्मास्यूटिकल और पर्यावरणीय डेटा को एकीकृत कर बेहतर निगरानी प्रदान करता है।
- **लागत प्रभावी समाधान:** जीनोमिक अनुक्रमण की तुलना में, एआई-आधारित मॉडल अधिक सुलभ और स्केलेबल होते हैं।

चुनौतियाँ:
- **डेटा गुणवत्ता:** एआई मॉडल सटीक और पूर्ण अस्पताल डेटा पर निर्भर करता है।
- **मॉडल की सटीकता:** अप्रत्याशित स्वास्थ्य संकट (जैसे महामारी) भविष्यवाणियों को बाधित कर सकते हैं।
- **कार्यान्वयन बाधाएं:** नियामक, नैतिक और तकनीकी चुनौतियाँ अपनाने में बाधा बन सकती हैं।

निष्कर्ष: AMRSense जैसे **एआई-आधारित उपकरण AMR** निगरानी, नीति-निर्माण और **एंटीबायोटिक स्टीवर्डशिप** में क्रांति ला सकते हैं। इनका प्रभावी एकीकरण दवा-प्रतिरोधी संक्रमणों के बढ़ते खतरे को रोकने में सहायक होगा।

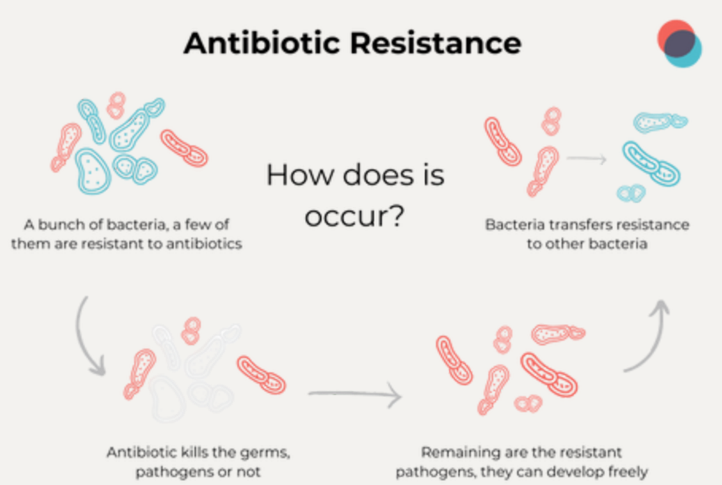

भारत का पहला स्वदेशी सेमीकंडक्टर चिप 2025 तक तैयार

समाचार: ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 में केंद्रीय आईटी मंत्री ने घोषणा की कि भारत का पहला स्वदेशी **सेमीकंडक्टर चिप 2025** तक उत्पादन के लिए तैयार होगा।

सेमीकंडक्टर का महत्व:
- **आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स की नींव:** कंप्यूटर, स्मार्टफोन, इलेक्ट्रिक वाहन, रक्षा, टेलीकॉम और एआई में उपयोग।
- **भारत की भारी आयात निर्भरता:** सालाना $24 अरब मूल्य के सेमीकंडक्टर्स आयात करता है।
- **स्वदेशी उत्पादन के लाभ:**
  - आयात निर्भरता कम होगी।
  - राष्ट्रीय सुरक्षा मजबूत होगी।
  - 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' को बढ़ावा मिलेगा।
  - उच्च कौशल वाली नौकरियों का सृजन होगा।

सरकारी पहलें:
- **इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन** (ISM) (2021): ₹76,000 करोड़ की योजना, फैब, निवेश और डिजाइन प्रोत्साहन के लिए।
- **उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन** (PLI) योजना: सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण को समर्थन।

रणनीतिक साझेदारियां:
- **भारत-अमेरिका iCET सहयोग:** सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी में सहयोग।
- **QUAD (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) पहल:** सेमीकंडक्टर आपूर्ति शृंखला को मजबूत करने के लिए।
- **पाँच सेमीकंडक्टर** इकाइयाँ निर्माणाधीन।

चुनौतियाँ:
- **वर्तमान में कोई व्यावसायिक** फैब नहीं (पहला 2025 तक आने की उम्मीद)।
- **ताइवान, दक्षिण कोरिया** और अमेरिका पर निर्भरता।
- **उच्च पूंजी, उन्नत तकनीक** और कुशल श्रम की आवश्यकता।
- **भू-राजनीतिक जोखिम** (अमेरिका-चीन तनाव, ताइवान संकट)।

आगे की राह:
- **सेमीकंडक्टर संयंत्रों** की शीघ्र स्थापना।
- **मजबूत बुनियादी ढाँचा** (बिजली, पानी, लॉजिस्टिक्स) विकसित करना।
- कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।
- स्थानीय स्टार्टअप्स को '**डिजाइन-लिंक्ड इंसेंटिव** (DLI)' योजना के तहत समर्थन देना।

निष्कर्ष: भारत का स्वदेशी **सेमीकंडक्टर उत्पादन आत्मनिर्भरता**, आर्थिक विकास और तकनीकी नवाचार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।"

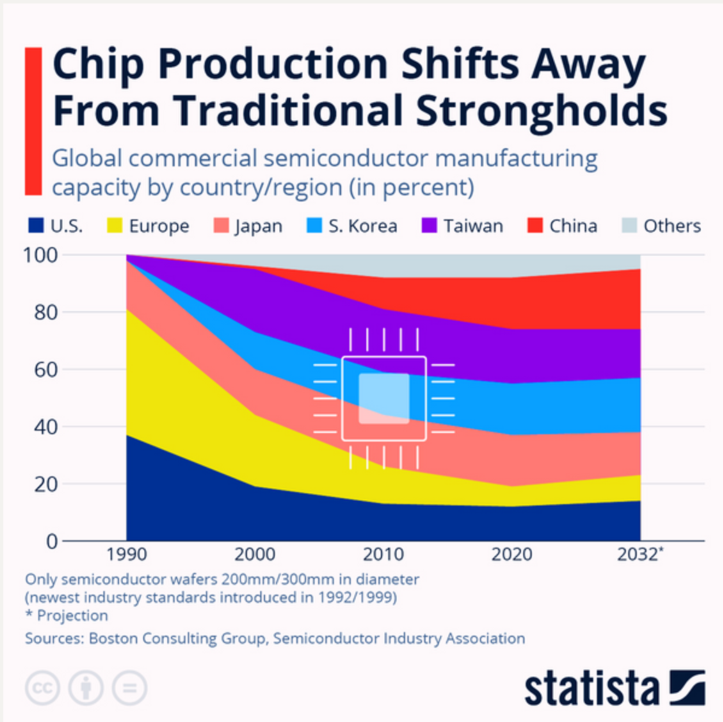

स्वयत्त पहल

समाचार: सरकारी **ई-मार्केटप्लेस (GeM)** ने स्टार्टअप्स, महिला एवं युवा लाभ ई-लेनदेन (SWAYATT) पहल के छह वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया।

SWAYATT के बारे में:

यह पहल 2019 में **सार्वजनिक खरीद में महिला** उद्यमियों, युवाओं और स्टार्टअप्स की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई थी।

उद्देश्य:

- **सामाजिक समावेशन** को बढ़ावा देना और स्टार्टअप्स, सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (MSEs), स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और पिछड़े समुदायों को व्यवसाय में आसानी प्रदान करना।
- **विक्रेताओं को प्रशिक्षित** कर सरकारी खरीद में छोटे व्यवसायों की भागीदारी बढ़ाना।

प्रभाव और वृद्धि:

- **GeM पर स्टार्टअप्स** ने अब तक ₹35,950 करोड़ के ऑर्डर पूरे किए।
- **महिला उद्यमियों** की भागीदारी GeM के कुल विक्रेताओं में 8% तक बढ़ी।
- **1,77,786 महिला-नेतृत्व** वाले MSEs ने ₹46,615 करोड़ के ऑर्डर पूरे किए।

भविष्य के लक्ष्य:

- **1 लाख स्टार्टअप्स को ऑनबोर्ड** करना और सार्वजनिक खरीद में महिला उद्यमियों की भागीदारी को दोगुना करना।
- **महिला-नेतृत्व** वाले व्यवसायों की हिस्सेदारी को वर्तमान 3.78% से और बढ़ाना।

काला प्लास्टिक: पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ

समाचार: एक अध्ययन में अमेरिका में **203 काले प्लास्टिक उत्पादों** का विश्लेषण किया गया, जिससे संभावित स्वास्थ्य जोखिम सामने आए।

मुख्य निष्कर्ष:

- **स्रोत:** काला प्लास्टिक अक्सर पुनर्नवीनीकरण इलेक्ट्रॉनिक कचरे से बनाया जाता है, जिसमें ब्रोमीन, लेड, कैडमियम और मरकरी जैसे जहरीले पदार्थ होते हैं।
- **स्वास्थ्य जोखिम:** इसमें बीडीई-209 (BDE-209) के निशान मिले, जो एक प्रतिबंधित फ्लेम रिटार्डेंट है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है।

सिफारिशें:

- **जल्दबाजी में न फेंके;** उत्पादों का उपयोग तब तक करें जब तक वे पूरी तरह अनुपयोगी न हो जाएं।
- **गैर-रीसाइकिल योग्य काले प्लास्टिक** के उचित निपटान को सुनिश्चित करें ताकि पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा सके।

नीले गाल वाले मधुमक्खी-भक्षक

समाचार: प्रायद्वीपीय भारत में नील-गाल मधुमक्खी भक्षक (Blue-Cheeked Bee-Eater) का पहला **प्रजनन स्थल आंडीविलई,** कन्याकुमारी ज़िले में खोजा गया।

इस प्रजाति के बारे में:

रूप-रंग: नीले गाल, काली आंखों की पट्टी, और पीले-भूरे गले वाला पतला हरा पक्षी।

आकार: लगभग 31 सेमी लंबा, जिसमें केंद्रीय पूंछ के पंख लंबे होते हैं।

आवास: एक प्रवासी प्रजाति, जो अफ्रीका, मध्य पूर्व, मध्य एशिया और भारत में पाई जाती है।

आहार: मधुमक्खियों, ततैयों और भृंगों जैसे कीटों को खाती है।

IUCN स्थिति: कम चिंता (Least Concern)।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025

समाचार: 28 फरवरी को सर **सी.वी. रमन** की रमन प्रभाव की खोज के सम्मान में मनाया जाता है।

थीम 2025: "**विकसित भारत** के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं का सशक्तिकरण।"

सी.वी. रमन के बारे में:

- **1930 में रमन** प्रभाव के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।
- 1926 में **इंडियन जर्नल ऑफ फिजिक्स** और 1948 में रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना की।
- **1933 में IISc** के पहले भारतीय निदेशक बने, 1954 में भारत रत्न से सम्मानित हुए।

2024 में प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियाँ:

- **वैश्विक नवाचार सूचकांक** (Global Innovation Index): भारत 39वें स्थान पर; बौद्धिक संपदा (IP) फाइलिंग में 6वें स्थान पर।
- **अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन** (ANRF) और पीएम अर्ली करियर रिसर्च ग्रांट (PMECRG) से R&D को बढ़ावा।
- **राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (NQM):** ₹6003.65 करोड़ का निवेश क्वांटम तकनीक में।
- **राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM):** 32 पेटाफ्लॉप्स तक विस्तारित, 77 पेटाफ्लॉप्स का लक्ष्य।
- **भारतजेन इनिशिएटिव** (BharatGen Initiative): भारत का पहला बहुभाषी एआई मॉडल विकसित किया जा रहा है।
- **STEM में महिलाओं की भागीदारी:** WISE-KIRAN जैसी योजनाएँ लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं।

राष्ट्रीय भूस्थानिक नीति 2022

समाचार: भारत को **भूस्थानिक प्रौद्योगिकी में वैश्विक** नेता बनाने और आर्थिक विकास व सुशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लागू।

मुख्य विशेषताएँ:

- **राष्ट्रीय मानचित्र नीति** (2005) को प्रतिस्थापित करता है और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) की 2021 की दिशानिर्देशों पर आधारित है।
- **भूस्थानिक डेटा** के अधिग्रहण और उपयोग को उदार बनाता है।
- **आत्मनिर्भरता, बुनियादी ढांचे** के आधुनिकीकरण और डेटा-संचालित शासन पर केंद्रित।
- 2030 तक **उच्च-रिज़ॉल्यूशन स्थलाकृतिक** सर्वेक्षण और डिजिटल एलिवेशन मॉडल (DEM) का लक्ष्य।
- बुनियादी ढांचा विकास के लिए पीएम गति शक्ति योजना के साथ संरेखित।

पहल एवं बजट:

- **ऑपरेशन द्रोणागिरी (2024):** 5 राज्यों में शासन और शहरी योजना के लिए पायलट प्रोजेक्ट।
- **केंद्रीय बजट 2025:** राष्ट्रीय भूस्थानिक मिशन के लिए ₹100 करोड़ का आवंटन, भूमि अभिलेख और शहरी योजना को बढ़ावा देने हेतु।

निष्कर्ष: **राष्ट्रीय भूस्थानिक नीति 2022** नवाचार, उद्यम विकास और प्रभावी शासन को बढ़ावा देती है, जिससे भारत 'विकसित भारत 2047' की दिशा में अग्रसर होगा।

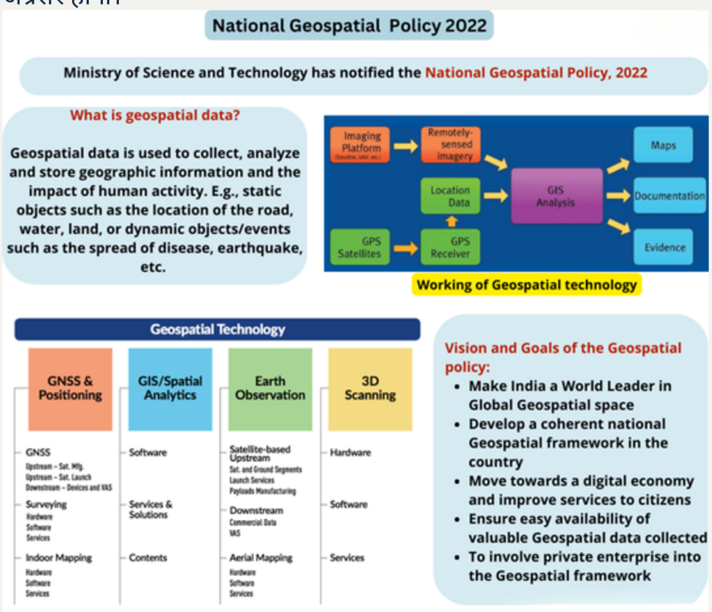

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न

1. निम्नलिखित में से हिमस्खलन (Avalanche) और भूस्खलन (Landslide) के बीच मुख्य अंतर क्या है?
- (a) हिमस्खलन में बर्फ और बर्फीली चट्टानें शामिल होती हैं, जबकि भूस्खलन में मिट्टी और चट्टानें होती हैं।
- (b) हिमस्खलन केवल हिमालय में होते हैं, जबकि भूस्खलन विश्वभर में होते हैं।
- (c) भूस्खलन मौसमी होते हैं, जबकि हिमस्खलन केवल सर्दियों में होते हैं।
- (d) हिमस्खलन भूकंप के कारण होते हैं, जबकि भूस्खलन भारी वर्षा के कारण होते हैं।

2. ग्लेशियर आइस एल्गी के कारण ग्रीनलैंड की बर्फ की चादरें तेजी से पिघलने का मुख्य कारण क्या है?
- (a) सौर परावर्तन (Solar Reflection) में वृद्धि
- (b) एल्गी द्वारा सूर्य के प्रकाश का अधिक अवशोषण
- (c) वायुमंडलीय तापमान में कमी
- (d) बर्फ के आंदोलन की कमी

3. निम्नलिखित में से कौन-सी बौद्ध परिषद बौद्ध धर्म के हीनयान और महायान शाखाओं में विभाजन का कारण बनी?
- (a) प्रथम बौद्ध परिषद
- (b) द्वितीय बौद्ध परिषद
- (c) तृतीय बौद्ध परिषद
- (d) चतुर्थ बौद्ध परिषद

4. "टी हॉर्स रोड" ऐतिहासिक रूप से किन दो क्षेत्रों के बीच व्यापार के लिए उपयोग की जाती थी?
- (a) चीन और मंगोलिया
- (b) भारत और तिब्बत
- (c) चीन और तिब्बत
- (d) फारस और भारत

5. 'पगड़ी संभाल जट्टा' आंदोलन की मुख्य मांग क्या थी?
- (a) किसानों को मतदान का अधिकार देना
- (b) भू-राजस्व की कमी और ऋण से राहत
- (c) ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता
- (d) चरागाह भूमि की सुरक्षा

6. अली आई लिगांग उत्सव किस भारतीय राज्य से संबंधित है?
- (a) असम
- (b) नागालैंड
- (c) अरुणाचल प्रदेश
- (d) त्रिपुरा

7. हाल ही में यूनेस्को विरासत मान्यता के लिए विचाराधीन लेपाक्षी मंदिर किस विशेषता के लिए प्रसिद्ध है?
- (a) झूलता हुआ स्तंभ (Floating Pillar)
- (b) सबसे बड़ा पत्थर का रथ
- (c) सबसे प्राचीन बौद्ध अवशेष
- (d) इंडो-ग्रीक वास्तुकला प्रभाव

8. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प F-35 और Su-57 लड़ाकू विमानों के बीच के अंतर को सही ढंग से दर्शाता है?
- (a) F-35 एक स्टील्थ मल्टीरोल जेट है, जबकि Su-57 वायु श्रेष्ठता (Air Superiority) पर केंद्रित है।
- (b) F-35 की गतिशीलता (Maneuverability) Su-57 से बेहतर है।
- (c) Su-57 एक सिंगल-इंजन विमान है, जबकि F-35 ट्विन-इंजन विमान है।
- (d) F-35 की रेंज Su-57 की तुलना में अधिक है।

9. नक्शा (NAKSHA) योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
- (a) डिजिटल भूमि अभिलेख सुधार
- (b) कृषि मानचित्रण
- (c) अंतरिक्ष-आधारित नेविगेशन
- (d) आपदा प्रबंधन

10. निम्नलिखित में से कौन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का प्रमुख अनुप्रयोग नहीं है?
- (a) चिकित्सा निदान (Medical diagnostics)
- (b) अंतरिक्ष अन्वेषण (Space exploration)
- (c) 100% सटीकता के साथ भूकंप की भविष्यवाणी करना (Predicting earthquakes with 100% accuracy)
- (d) साइबर सुरक्षा (Cybersecurity)

11. भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से किस पर केंद्रित है?
- (a) अंतरिक्ष अभियानों में निजी क्षेत्र की भागीदारी
- (b) भारत के उपग्रह निर्माण को बढ़ावा देना
- (c) अंतरिक्ष पर्यटन और अंतरग्रहीय यात्रा
- (d) केवल सरकारी नेतृत्व वाले अंतरिक्ष कार्यक्रम

12. नैनोक्रिस्टल की क्वांटम विशेषताएँ किस क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं?
- (a) कृत्रिम बुद्धिमत्ता
- (b) उच्च गति कंप्यूटिंग
- (c) दवा निर्माण
- (d) जीवाश्म ईंधन अन्वेषण

13. भारत के सर्वोच्च न्यायालय में एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड (AOR) की भूमिका क्या होती है?
- (a) सभी जिला न्यायालयों में ग्राहकों का प्रतिनिधित्व करना
- (b) मामलों को दायर करना और सीधे सर्वोच्च न्यायालय में ग्राहकों का प्रतिनिधित्व करना
- (c) केवल मध्यस्थता (Arbitration) से जुड़े मामलों का संचालन करना
- (d) केवल वरिष्ठ अधिवक्ताओं की सहायता करना

14. डिरेग्युलेशन कमीशन (Deregulation Commission) का प्राथमिक कार्य क्या है?
- (a) आर्थिक क्षेत्रों में सरकारी नियंत्रण को कम करना
- (b) आवश्यक वस्तुओं पर सब्सिडी बढ़ाना
- (c) व्यापार प्रतिबंध लगाना
- (d) केवल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को बढ़ावा देना

15. एंटीबायोटिक प्रतिरोध (Antibiotic Resistance) एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि यह किस कारण से जुड़ा है?
- (a) एंटीबायोटिक की प्रभावशीलता में वृद्धि
- (b) बैक्टीरिया संक्रमण का इलाज करने में कठिनाई बढ़ना
- (c) बीमारियों के प्रसार में कमी
- (d) मनुष्यों में प्रतिरक्षा प्रणाली (Immune Response) में सुधार

16. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (National Science Day) 28 फरवरी को क्यों मनाया जाता है?
- (a) रामन प्रभाव (Raman Effect) की खोज की स्मृति में
- (b) भारत के पहले उपग्रह के प्रक्षेपण की स्मृति में
- (c) इसरो (ISRO) की स्थापना की स्मृति में
- (d) रेडियो तरंगों (Radio Waves) की खोज की स्मृति में

17. टोंकिन की खाड़ी (Gulf of Tonkin) सामरिक रूप से क्यों महत्वपूर्ण है?
- (a) यह एक प्रमुख तेल उत्पादक क्षेत्र है
- (b) वियतनाम युद्ध में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी
- (c) यह प्रशांत महासागर को हिंद महासागर से जोड़ती है
- (d) यह यूरोप और एशिया के बीच एक व्यापार मार्ग है

18. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य रत्नागिरी बौद्ध विरासत स्थल (Ratnagiri Buddhist Heritage Site) का घर है?
- (a) बिहार
- (b) ओडिशा
- (c) मध्य प्रदेश
- (d) महाराष्ट्र

19. डिरेग्युलेशन कमीशन (Deregulation Commission) मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
- (a) निजी उद्योगों का विनियमन (Regulating private industries)
- (b) अर्थव्यवस्था में सरकारी नियंत्रण को कम करना
- (c) नौकरशाही निगरानी (Bureaucratic Oversight) को बढ़ाना
- (d) शासन में भ्रष्टाचार की निगरानी (Monitoring Corruption in Governance)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

इतिहास और संस्कृति

- रत्नागिरी में पाए गए बौद्ध अवशेषों का महत्व क्या है? ऐसे खोज भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत में कैसे योगदान करते हैं?

शासन और नीति

- भारत में आर्थिक सुधारों में डिरेग्युलेशन कमीशन (Deregulation Commission) की क्या भूमिका है? डिरेग्युलेशन (नियमन हटाने) का शासन और राज्य की भूमिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- भारत में बार-बार इंटरनेट शटडाउन होने से उनकी कानूनी वैधता और आर्थिक प्रभाव को लेकर चिंताएँ उठती हैं। इंटरनेट प्रतिबंधों को नियंत्रित करने वाले मौजूदा कानूनी ढांचे की आलोचनात्मक समीक्षा करें।
- सुप्रीम कोर्ट ने कचरे के स्रोत पर ही पृथक्करण (waste segregation at source) के महत्व पर जोर दिया है। इस निर्देश को लागू करने में क्या चुनौतियाँ हैं और भारत में प्रभावी कचरा प्रबंधन के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन को बदलने की क्षमता रखती है। भारतीय कानूनी प्रणाली में AI के एकीकरण से मिलने वाले अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण करें।
- भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था (space economy) आने वाले वर्षों में पाँच गुना बढ़ने की उम्मीद है। इस वृद्धि के प्रमुख कारक और भारतीय अंतरिक्ष उद्योग में निजी क्षेत्र की भागीदारी की भूमिका पर चर्चा करें।

अंतरराष्ट्रीय संबंध

- भारत की 'लुक ईस्ट' नीति (Look East Policy) 'एक्ट ईस्ट' नीति (Act East Policy) में कैसे विकसित हुई है? दक्षिण-पूर्व एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति भारत के दृष्टिकोण में प्रमुख बदलावों का विश्लेषण करें।

कृषि और अर्थव्यवस्था

- 10,000 किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) की स्थापना कृषि सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसानों को सशक्त बनाने और कृषि आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने में इनकी भूमिका का मूल्यांकन करें।